Rs. 5/-

શ્રી સ્વામિનારાયણ

April 2009



નૈરોબી (શ્રી કચ્છ સ્વા. સત્સંગ) મંદિરમાં પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રીના વરદ્ હસ્તે રંગોત્સવ અને પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રીના વરદ્ હસ્તે કાલુપુર મંદિરમાં ફુલદોલોત્સવ

પ્રકાશક: શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧
Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



प.पू. बड़े महाराजश्री श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लाभार्थ पूर्व आफ्रिका के प्रवास के समय नाइरोबी में एक कोरी की मुलाकात के समय संत मंडल



नाईरोबी (क.स्वा.स.) मंदिर की सभा में आशीर्वाद देते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री



कंपाला में एक हरिभक्त के घर पदार्पण के समय प.पू. बड़े महाराजश्री की आरती उतारते हुये अग्रगण्य हरिभक्त



टोरोरो मंदिर में आरती उतारते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री



किसुमु मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री की आरती उतारते हुये हरिभक्त



ओकलेन्ड (न्युजीलेन्ड) मंदिर के प्रथम पाटोत्सव के अवसर पर सभा में पार्लामेन्ट के सदस्य मी. करोल व्युमोन्ट धन्यता का अनुभव करते हुये



एल्बोरेन के मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री की आरती



भीमपुरा (माणसा) प्रथम पाटोत्सव के अवसर पर यजमान



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फेक्स : २२१७६९९२.
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - 2 अंक : 24 एप्रिल-2009

अनुक्रमणिका

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	श्रीहरि के अपर स्वरुप का आशीर्वचन	४
४.	होली खेले महाराज श्रीपुर में होली खेले महाराज	५
५.	क्या धर्मवंशी आचार्यपदकी आज्ञा से अक्षरधाम की प्राप्ति संभव है ?	७
६.	आदि आचार्य प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्रीकी महत्ता	९
७.	मूर्ति प्रतिष्ठा एवं शहर चोर्याशी माहोत्सव श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया-अहमदाबाद	१०
८.	देयर-भाभी का प्रेम	१७
९.	हरि भजन से महानता प्राप्त हो	१८
१०.	सत्संग बालवाटिका	१९
११.	भक्तिसुधा	२१
१२.	प्रश्न पेटी	२३
१३.	सत्संग समाचार	२४

: संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक :
महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए
श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

अस्मदीयम्

अनंतकोटि ब्रह्मांडके अधिपति ऐसे भगवान श्री स्वामिनारायणने इस सत्संग की स्थापना करके कल्याण का महामार्ग प्रस्थापित किया । थोड़े ही समय में श्रीजी महाराज ने करोड़ो जीवों को इस लोक तथा परलोक में सुखी होने का मार्ग प्रशस्त किया । सर्वावतारी भगवान की सर्वोपरिता तो यह थी कि करोड़ो जीवों का कल्याणकरना, लेकिन आत्म परिवर्तन-वशीकरण, चमत्कार या भय से नहीं करना था, लोगों में स्वतः समझ आये यह भावना थी । इसलिये स्वयं गाँव-गाँव घूमते तथा संतो को भी देश-देशांतर में विचरण करने को कहते, इतना हीनहीं संतो को तथा सत्संगी को अपने पास रखकर सत्संग की सच्ची सीख देते । जिसमें भक्ति, व्रत, दर्शन, ज्ञान, वैराग्य, सेवा इत्यादिको समझाते । परिणाम स्वरूप उसीका प्रतिफल आज समाज में प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है । स्वयं के हृदय से पूछना चाहिये कि सत्संग, भजन, भक्ति, व्रत, दान, तप, पूजा इत्यादि क्यों करता हूँ इसलिये कि हमें सभी जाने ? मेरी छाप समाज में पड़े इसलिये ? मेरा समाज में संमान हो इस लिये ? घर परिवार से झगड़ा है इसलिये ? इस उम्र में मंदिर के सिवाय कहाँ जांय इसलिये ? इस प्रकार के विचार में यदि हाँ उत्तर आवे तो समझना चाहिये कि हमारी समझ में कुछ कमीहै । मैं सत्संग करता हूँ केवल अपने जीव की उन्नति के लिये, अपनी आत्मा के कल्याण के लिये, हमारी तथा हमारे भगवान में निकटता बढे इसलिये सत्संग करता हूँ । इस प्रकार की समझ आने पर ही महाराज की प्रसन्नता मिलेगी । इसके साथ ही सत्संगकरने का आनंद भी मिलता रहेगा । ऐसी समझ जब आजाय तो मानना चाहिये कि हम अब कृत कृत्य हो गये हैं ।

अपना "धर्मकुल वंदना महोत्सव" अब बिल्कुल सन्निकट आ गया है । देश-विदेश से भक्तलोग इस कार्यक्रम में यथाशक्ति सहयोग करने लगे हैं । समुद्र में एक लोटा पानी डालना हो तो बड़ा कठिन होगा । परंतु वही लोटे का पानी समुद्र तक वह कर जाने वाली नदी में डाल दिया जाय तो कितना सरल हो जायेगा । इसी तरह इस कार्यक्रम में भी यथा शक्ति तन, मन, धन से सहयोग करके सहभागी बने ऐसी अभ्यर्थना ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदास का

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री
के शुभ कार्यक्रमों की रूपरेखा
मार्च -२००९

१. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया में श्री घनश्याम महाराज की प्राण प्रतिष्ठा तथा श्री राधाकृष्ण महाराज का पाटोत्सव अपने वरद् हाथों से संपन्न किये ।
डॉ. चिंतन केवलदास पटेल के हास्पिटल में पदार्पण सोला रोड-भूयंगदेव ।
२. श्री स्वामिनारायण मंदिर सापावाडा के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण रात्रि में ही भुज पदार्पण ।
३. रापर (भुज) पदार्पण ।
४. श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच बापूनगर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
५. श्री स्वामिनारायण मंदिर कंजरीकंपा ५० वें पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
६. श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोड़िया तथा राणीप श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
७. श्री स्वामिनारायण मंदिर गुन के "धर्मकुल वंदना महोत्सव" प्रसंग पर आयोजित सत्संग सभा में पदार्पण ।
प.भ. मनोजभाई घनश्यामभाई दलाल के यहाँ पदार्पण नवावाडज ।
११. से १२. भुज (कच्छ) मदनपुर (कच्छ) पदार्पण ।
१३. से २५. मार्च अमेरिका के धर्मप्रवास में पदार्पण ।
२६. से २७. केरा (कच्छ) पदार्पण ।
२८. रडोदरा गांव में पदार्पण ।
२९. धनुसरा गाँव में पदार्पण ।
३०. जामसर हालार (मूलीदेश) पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
वहीं से राजकोट हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण ।
३१. भावनगरपुरा (प्रतापपुरा) श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।



श्रीहरि के अपर स्वरुप का आशीर्वचन

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

ता. २८-२-०९ के दिन अहमदाबाद मंदिर श्री नरनारायणदेव पाटोत्सव के प्रसंग पर तथा ता. १-३-०९ के दिन कांकरिया मंदिर में श्री घनश्याम महाराज की प्रतिष्ठा के असवर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से जो आशीर्वचन सुने उसे यहाँ संक्षिप्त में प्रस्तुत कर रहे हैं । निष्ठावान हरिभक्तो के लिये तथा अंक के वाचकों के लिये सुनकर इस आशीर्वन को लिखते हुए बड़ा आनंद हो रहा है ।

प.पू.ध.धु. आचार्य श्री राकेशप्रसादजी महाराजश्री : श्रीजी महाराज ने वचनामृत में कहा है कि "कोई शेठ रकम के बदले में कुछ कागज पर लिखकर देता है लेकिन वही रकम समय पूर्ण होने पर द्विगुणीकृत होकर अधिक हो जाता है । इसी तरह कोई विशिष्ट आदमी आज्ञा किये हो तो उसमें तुरंत कोई लाभ भले दिखाई न दे, लेकिन समय वीतते लाभ दिखाई अवश्य देगा । सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण ने विधि-निषेध रुप में आज्ञा की है । प्रथम तो यह कि जो व्यक्ति महाराज की आज्ञानुसार वर्तन करेगा उसे तत्काल लाभ भले न हो, परंतु दृढता से वर्तन करने वाला इस लोक में सुखी होता है तथा परलोक में सुखी होता है ।

सुवर्ण खरीदने की जिसमें शक्ति न हो तो वह सुवर्ण के पानी वाला निकलस अर्थात् खोटा आभूषण पहनता है । परंतु उसके मन में सच्चे आभूषण की परिकल्पना तो रहती ही है । हम एकबार एक हरिभक्त के घर पर गये वहाँ देखा तो वह हरिभक्त अपने घर के मुख्य दरवाजे पर प्लास्टिक का नीबु मरचा लटका कर रखा था । मैंने उससे पूछा कि यह क्या है ? हरिभक्तने कहा नकली नीबू मरचा है, रोज कौन खरीदेगा, तान्त्रिक विधि के लिये लटकाये हैं । अब आप विचार करें जब हमें साक्षात् परमात्मा मिले हैं तो तन्त्र विधि की क्या आवश्यकता, उस में भी नकलीवस्तु । यह मात्र अपने को अर्थात् स्वयं को ढगने वाला काम है । हमें श्रीजी महाराजने मूल भूत स्थान दिया है । इन मूल स्थानो का हमें विकास करना है, ऐसा कहकर अंत में सभी को आशीर्वाद दिये थे ।

प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री : किसान कूँआ के पानी से या मोटर पंप से खेत के ४-६ विघा जमीन को सींच सकता है । किसान का यह प्रयत्न पुरुष पर्यत्न कहा जायेगा । लेकिन जब भगवान पानी की बरसात करते हैं तो एक ही साथ में कितने ही खेत भरजाते हैं । भगवान बरसात करें तो यह ईश्वरीय कृपा कही जायेगी । पुरुष प्रयत्न करके रुपये कमाता है लेकिन वह कब चलाजायेगा किसी को खबर नहीं । शेर बजार में तेजी हो तो सभी में तेजी रहती है, लेकिन जब मन्दी आजाती है तो क्या दशा हो जाती है, यह सभी को अनुभव हुआ है । जिसके ऊपर भगवान की कृपा हो उसका अक्षय होता है । उसका कभी कम नही होता । इसी तरह भगवान ने जो मार्ग बताया है, उस मार्ग पर चलें तो सुखी रहेंगे । चदि बताये मार्ग से विपरीत जायेंगे तो दु:खी होगे । कल्याण बिगड़ेगा । आप निष्ठापूर्वक श्री नरनारायणदेव में आत्मसमर्पित भाव रखेंगे तो कही अन्यत्र जाने की जरुरत नही पड़ेगी सभी प्रकार कल्याण होगा । लेकिन दृढ निष्ठा आवश्यक है ।

कितने लोग हमेंशा कहते है कि महाराजश्री ! आप हरदम हंसते ही रहते हैं । तो क्यों न हंसे ? जब हमे ऐसे भगवान मिले हैं । ऐसे प्रभु का अहर्निश हृदय में आनंद बना रहना चाहिये । हम क्यो श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव की प्रतिक्षा करते रहते हैं ? इसलिये की श्री

अनुसंधान पृष्ठ नंबर ८

होली रवेले महाराज श्रीपुर में होली रवेले महाराज

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)



श्रीपुर (अहमदाबाद) शहर के मध्य में श्रीहरि दो बार होलिकोत्सव तथा फूलदोलोत्सव किये थे।

संवत् १८५९ में श्रीहरि दूसरीबार अहमदाबाद पधारे थे। संवत् १८५९ के माघ मास में श्रीहरि मछियाव से विंछिया तथा वहाँ से साणंद होकर सरखेज गाँव पधारे थे। उस समय श्रीनगर (अहमदाबाद) की शोभा देखकर श्रीहरि खूब प्रसन्न हुये थे।

फाल्गुन शुक्ल पूनम होलिकोत्सव का दिन था। उस समय भक्तों ने श्रीहरि का विविध उपचारो से पूजन किया था। भक्तों का भाव देखकर श्रीजी महाराज अत्यानन्दित हुये थे। बाद में श्रीहरि कहने लगे कि "कल श्री नरनारायणदेव का जन्मोत्सव (फूलदोलोत्सव) हैं। यह उत्सव खूब धूमधाम से मनाना है।

फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा के दिन श्रीहरि प्रातः काल उठकर स्नान संध्या पूर्ण करके तैयार हो गये। बाद में संतो ने तथा भक्तों ने अशोक के पत्तो का एवं आम के पत्तो का नाना विध फूलों से अलंकृत एक सुन्दर झूला तैयार किया। बाद में श्री नरनारायणदेव की सुवर्णमयीमूर्तियो को पंचामृत से स्नान कराकर झूले पर विराजमान करके धूप-दीप से आरती उतारी गई थी। बाद में सभी ने गाने बजाने के साथ दिव्य फूलदोलोत्सव मनाया था।

संवत् १८५९ की वसंत पंचमी से प्रारम्भ करके फाल्गुन पूनम तक करीब डेढ महीने तक अहमदाबाद मंदिर में फूल दोलोत्सव मनाया गया था, वही क्रम आज भी चालू है। इस उत्सव की शोभा इतनी अलौकिक होती है कि जो भी इसका लाभ लिया होगा उसके अन्तर में अमिटछाप सदा के लिये अंकित हो जायेगी।

अहमदाबाद के आंगन में मनाया गया यह प्रथम फूलदोलोत्सव था। श्री स्वामिनारायण भगवान श्री नरनारायणदेव की महिमा को प्रतिष्ठित किये थे। यह उत्सव महिमा के साथ भक्तों के हृदय में व्याप्त हो गया।

इसके बाद संवत १८८१ में श्रीहरि जब इक्कीसवीं बार अहमदाबाद पधारे उस समय होली का उत्सव एवं फूल दोलोत्सव बड़े उत्साह के साथ मनाया गया था।

गढपुर से संवत् १८८१ के माघ महीने में श्रीहरि चले वे सारंगपुर, सुंदरियाणा, कंथारिया, शियाणी, तावी देहावलिया, धंधुका मछियाव इत्यादि गाँवो के हरिभक्तों की सेवा स्वीकार करके साणंद होकर अहमदाबाद पधारे थे। उस समय अहमदाबाद मंदिर में आने की खबर सुनकर संत भक्त वाद्ययंत्रो के साथ उत्सव करते हुये श्रीहरि के स्वागतार्थ सामने गये। उस समय सारा शहर स्वागत के लिये उमटपड़ा था। सभी लोग अपनी शक्ति अनुसार भेंट सौगात अर्पित किये। पुष्पहार पहनाये, साष्टांग प्रणाम किये, दर्शन का दिव्य लाभ लिये।

प्रतिदिन संत होली के पद गाते थे। उत्सव करते थे। श्रीहरि सभा में गुलाल उड़ाते और भक्तों को प्रसाद देते थे। इस तरह करते हुये फाल्गुन पूरा हो गया। फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा अर्थात् श्री नरनारायणदेव का जन्म जयंति। श्री नरनारायणदेव का विधिपूर्वक षोडशोपचार पूजन-अर्चन-वन्दन करके झूले पर विराजमान करके झुलाने लगे। बाद में श्री नरनारायणदेव के सन्मुख चौक में एक विशाल काष्ठपीठ पर श्रीहरि बिराजमान हुये तथा सन्मुख नन्द-संत एवं हरिभक्त विराजमान होकर होली के गीत गाने लगे। कुछ समय के बाद आधारानंद स्वामी किशुंक पुष्प से बने रंग को महाराज के सामने रख दिये। अब महाराज

सोने की पिचकारी से सभी के उपर रंग का बरसात करने लगे । उससे भी संतोष नही हुआ तो सोने के कटोरे से रंग फेंकने लगे ।

संतो तथा हरिभक्तों को रंग से तरबतर करके सभी के ऊपर गुलाल उड़ाने लगे । उस समय श्री नरनारायणदेव का पूरा चौक रंग से रंगा गया था । उसी समय आनंद स्वामी आकर कहे कि हे प्रभो ! गोविंदभाई तथा हीराचंद चोकसी इत्यादि उत्सव मनाने वाले हरिभक्त वसंत पंचमी से आरंभ करके आज तक अर्थात् डेढ महीने तक सायंकाल कीआरती के बाद प्रतिदिन गीतोत्सव करते हैं । वे सभी उत्सवी गीत गानेवाले भक्त झूलोत्सव भी करते हैं । वे सभी उत्सव के गीत गाने वाले भक्त श्री नरनारायणदेव के समक्ष गीत गा रहे है और रंग से वंचित है । आप उन्हें भी रंग से स्नान करावे ।

बाद में श्रीहरिने वहाँ आकर उन सभी के ऊपर रंग डालकर भिगो दिया । गुलाब तथा रंग से सारा मंदिर भर गया ।

रंग लीला पूर्ण करके श्रीहरि संत-भक्तों को साथ लेकर अश्व पर सवार होकर साबरमती स्नान के लिये गये । मुख्य राजमार्ग से होते हुये गाजते बाजते के साथ भक्तो की एक गावँ लंबी लाइन लगी थी । ऐसा लग रहा था कि श्रीहरि पास में चल रहे हो । श्रीहरि रास्ते में दाडिम खाते चल रहे थे । उस समय एक विचित्र वेश धारी महाराज के पास आया । श्रीहरि को उसने एक वृक्ष के नीचे खड़ा होने को कहा । श्रीहरिने उसे अपने दाडिम में से आधा दाडिम प्रसाद के रुप में दिया । उस के मस्तक पर अपना पैर रखा जिससे उसका वासनामय शरीर छूट गया और भगवती शरीर प्राप्त करके श्रीहरि की इच्छा से बदरिकाश्रम चला गया । संत भक्तों के साथ श्रीहरि साबरमती में स्नान किये । उस समय साबरमती का नीर केशरवर्णी होगया । श्री नगर में मनाये गये इस उत्सव के प्रत्यक्ष द्रष्टा प.पू. अवधप्रसादजी महाराजश्रीने इस उत्सव के सन्दर्भ में चार पद लिखा -

होरी खेले महाराज श्रीपुर में होरी खेले महाराज एक और श्री घनश्याम सखा अब एक ओर संत समाज... श्री केसर रंग भरी पिचकारी, बाजत अनहद बाजा.... श्री उडत गुलाल भये बादल, निरंखत सुरपति राजा.... श्री अवधप्रसाद संग खेल, जनम सुफळ कियो काजा .... श्री

श्रीजी महाराज इन सभी उत्सवो में जिन वस्तुओं का उपयोग या जिन वस्त्रो का उपयोग किये थे वह धर्मकुल की परंपरा में प्राप्त होता गया जो आज भी विद्यमान है । उन सभी वस्तुओं के रक्षणार्थ प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी का दिव्य संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युझियम साकार हो रहा है । इस म्युझियम में प्रसादी की सभी वस्तुयें दर्शनार्थ रखी जायेंगी । श्रीहरिने अपने भव्य रंगोत्सव में जिन पिचकारियों को तथा जिन वस्त्रों का उपयोग किया था उन सभी वस्तुओं को श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज को प्रसादी के रुप में दे दिया था ।

इन सभी प्रसादी की वस्तुओं को प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने जैसी की तैसी सुरक्षित रखी है । श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का दिव्य संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युझियम में सभी दिव्य वस्तुओं का जब दर्शन करेंगे उस समय मानो रंगोत्सव का साक्षात् दर्शन होता रहेगा ।

रंगोत्सव जैसे लोकोपभोग्य उत्सव को श्रीहरिने रंग से रंगीन बना दिया था । इस उत्सव को अधिक संवारा था । आज श्री अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में आचार्यश्री तथा लालजी महाराजश्री किंशुक के फूलो से बने रंग को होली खेलते है और सभी को गुलाल से तरबतर कर देते हैं ।

पहले के समय में यांत्रिक साधन नहीं होते थे । बड़े पात्र में रंग बनाया जाता उसे महाराजश्री पिचकारी से छिड़कते थे । आज तो पावर मोटर का उपयोग किया जाता है ।

किंशुक के पुष्परस से बने इस रंग की एक बूंदभीअपने वस्त्र का स्पर्श कर जाय तो श्रीहरि के रंगोत्सव का आनंद हृदय में उतर जाय । इसके लिये पुरुष प्रयत्न तो स्वयं करना होगा । भगवान नरनारायणदेव अपने प्रांगण में (कालुपुर के चौक में) सदा विराजमान होकर रंगोत्सव द्वारा सुखी करने के लिये सदा सस्मित खड़े हैं ।

क्या धर्मवंशी आचार्यपदकी आज्ञा से अक्षरधाम की प्राप्ति संभव है ?

- जयंतीलाल के. सोनी (मेमनगर-अहमदाबाद)

श्रीहरि इस ब्रह्मांड में सर्वप्रथम पधारे उस समय वैराज नारायण की प्रार्थना स्वीकार करके तथा गूढ संकल्प को पूर्ण करने की इच्छा से पधारे थे।

आज तक किसीने अपना आत्यंतिक कल्याण कर नही पाया। जीव इस भवाटी में भटकता रहा है और वारंवार यमयातना सहकर जन्म-मरण स्त्री असह्य पीड़ा सहता रहता है। इस यातना में से बाहर करने के लिये तथा अक्षरधाम के अलौकिक सुख की प्राप्ति कराने के लिये परमात्मा ने इस धरा पर अवतार लिया था।

श्रीहरिने दया करके मुमुक्षु जीव को मनुष्यदेह प्राप्त कराकर इस भरतखंड में स्वयं अवतरित हुए तथा स्वयं स्वामिनारायण संप्रदायकी स्थापना करके धर्म-नियम द्वारा आत्यंतिक कल्याण किये। युगों तक प्रगटपना का भाव बना रहे इस हेतु से शास्त्रों की रचना, मंदिरो का निर्माण उसमें मूर्ति प्रतिष्ठा, तथा समग्र आश्रितों के लिये गुरुमद पर धर्मवंश में आचार्य पद की स्थापना की। ये सभी संकल्प एक दूसरे के पूरक हैं। इसलिये इन तीनों में से एक की भी आज्ञा का लोप नहीं किया जा सकता है। समग्र धर्मवंश में एक अद्वितीय परम्परा यह भी प्रारंभ किये कि आचार्य पत्नी (गादीवाला) भी महिलावर्ग के गुरुपद पर रहकर स्त्री धर्म की रक्षा के लिये मार्ग दर्शन करेंगी।

अक्षरधाम की प्राप्ति के लिये श्रीहरि की आज्ञानुसार धर्मवंशी आचार्य की शरण बहुत ही महत्व का है, इस वात को श्रीहरिने गढडा प्रथम वचनामृत में कहा है कि "इस धर्मकुल का आश्रित भक्त शरीर छोड़कर जब जाता है तब भगवान के धाम को प्राप्त करता है। इससे स्पष्ट होता है कि धर्मकुल का अर्थात् धर्मवंशी आचार्य की शरण के विना अक्षरधाम प्राप्ति संभव नहीं है। इसलिये श्रीहरिने हम सभी के कल्याणार्थ धर्मवंशी आचार्य पद की स्थापना की थी। इसपद के प्रति यदि निष्ठा नहीं होगी तो वह सत्संगी कहलाने के योग्य नहीं है।

धर्मवंशी आचार्यपद की कितनी गरिमा है इस वात को श्रीहरिने स्वयं स्पष्ट की है।-

(१) आचार्यपद हमारा अपर स्वरूप है।

(२) धर्मकुल के आश्रित भक्त अक्षरधाम को जाते हैं।

(३) धर्मवंशी आचरज मांयरे, सदा रह्यो छुं मारी इच्छाय रे, अति धर्मवाला जोई जन रे, एमा मानी गयु मारुंमन रे।

(४) "अपने धर्मकुले जेवा जाण्या छे तेवा अन्ये जाण्या नथी, तेथी धर्कुल अमोने अति वहालु छे।"

(५) "मारा धाममां आववा सहु रे, एवा कर्या उपाय - में बहु रे, सर्वे उपाय कीधा छे सारा रे, तेमां तरसे जीव अमारा रे पण छेल्ले छे आजे उपाय रे, बहु जीव तरसे आ माय रे धर्मवंशी आचारज धार्या रे, गुरु करी गादीए बेसार्या रे।

(६) गढडा मध्य-१६ वे वचनामृत में कहा है कि भगवान तो धर्मधुरंधर है। आचार्यश्री भी भगवान के स्वरूप है। इसलिये इन्हें भी धर्मधुरंधर कहा जाता है।

इतनी बड़ी पदवी स्वयं श्रीहरि ने आचार्यश्री को दिया है। फिर भी आचार्य महाराजश्री अपने में न जोड़कर श्रीहरि में जोड़ते है। वे कभी भी अपनी भजन के लिये या माला फेरने की वात नहीं करते हैं। अपने चरित्र का गुणगान नहीं करवाते। बल्कि परमात्मा में जोड़ते रहते हैं। यही हमारे आचार्य पद की महिमा है। श्रीहरि के अपर स्वरूप हैं। गुरुमंत्र, मूर्ति प्रतिष्ठा, दीक्षा, सद्विद्या इत्यादि की प्रवृत्ति कराकर अक्षरधाम की प्राप्ति में सहायक होते हैं। उपरोक्त सभी अधिकार मात्र धर्मवंशी आचार्य को श्रीहरिने दिया है। शिक्षापत्री में यह वात स्पष्ट की है।

"कांजे ए छे धर्मकुल रे, मारे ए वातनुं उंडु मूल रे,
जेवुं अमारुकुल मनाशे रे, तेने तुल्य बीजुं केम थाशे रे॥"

अखिल ब्रह्मांड के अधिपति श्रीहरिने अनंत कोटि ब्रह्मांड के जीवों के कल्याण हेतु आचार्य पद की स्थापना करके महान उपकार किया है। उन्हीं परमात्मा की भ्रुकुटि के विलास मात्र से प्रलय होती है, ऐसे श्रीहरि के लिये क्या असंभव है फिरभी शि.प. श्लो.

६६ के अनुसार जिस मनुष्य में जो गुण हो उसी में लगाना चाहिये ।" यह ध्यान रखकर आचार्य पद की गरिमा का ध्यान रखकर आश्रितजनो के लिये यह पद श्रेष्ठ है । आश्रितजन अपना इस पद से कल्याण प्राप्त कर सकते हैं । शि.प. श्लोक ६२ में लिखा है कि "श्रीहरि द्वारा प्रतिष्ठित धर्मवंश आचार्य के सिवाय अन्य की आज्ञा नहीं मानना तथा जिस मूर्ति का आचार्यश्री प्रतिष्ठा नहीं किये हो उसे नमस्कार भी नहीं करना ।

इससे यह स्पष्ट होता है कि जिस मूर्ति की प्रतिष्ठा आचार्य महाराजश्री करे उसमें ही श्रीहरि का वास होता है । इसके अलांवा अन्य द्वारा प्रतिष्ठित मूर्ति की पूजा-आरती या लगाया गया भोग निर्गुण समझना चाहिये । इसलिये बुद्धिमान व्यक्ति को चाहिये कि श्रीहरिकी आज्ञानुसार आचार्य महाराजश्री को ही गुरूमद पर मानकर श्रीहरि के रूप में देखना श्रेयष्कर है यही पद मोक्ष को देने वाला है । धर्मवंशी आचार्य के सिवाय अन्य से दीक्षा लेने लायक नहीं हैं ।

एक विचारणीय अवश्य है कि यदि श्रीहरि आचार्यपद की स्थापना न किये होते तो मूर्ति प्रतिष्ठा कौन करता ? मंत्रदीक्षा कौन देता ? आचार्य पद नहीं होता तो आचार्य पत्नी नही होती और महिला वर्ग के लिये गुरुकहाँ मिलती और दीक्षा कौन देती ? उपरोक्त में ही कल्याण है । करूणा सागर श्रीहरि ने आचार्य पद की स्थापना करके यह कहा कि आचार्य हमारे स्वरूप हैं इसलिये जो मेरे दर्शन-पूजन से लाभ होता है वह लाभ धर्मवंशी आचार्यश्री के दर्शन पूजन से होगा । इसलिये आत्यंतिक कल्याण के लिये प्रत्येक मुमुक्षुजन श्रीजी महाराज की आज्ञानुसार आचार्यश्री की शरणागति प्राप्त करके मनुष्य जन्म सफळ करलें ।

पृष्ठ ४ से आगे.....

नरनारायणदेव के दिव्य दर्शन एवं चरण स्पर्श का लाभ मिले और वह दिव्य दर्शन एवं चरण स्पर्श वर्ष भर हृदय में आनंद देता रहता है । पाटोत्सव के दिन हम श्री नरनारायाणदेव का चरण स्पर्श करके, चरणों में मस्तक रखकर सम्पूर्ण वर्ष पर्यन्त सत्संग में घूमते रहते हैं और आनन्द के साथ हंसते रहते हैं ।

पाटोत्सव के यजमान तथा सुवर्ण ध्वजदंड के यजमान को ही हम पहचानते हैं ऐसा नहीं हैं । बल्कि आप सभी हमारे परिवार हो । सेवा केवल पैसे देने से नहीं होती । सेवा का प्रकार अनेक हैं । कोई यहाँ आकर झाडू लगाता है, पोछा मारता है, अन्य और बहुत सारे सेवाके प्रकार है, इस सेवा का अनंतफळ बताया गया है । यहाँ और विशेष नहीं कहकर इतना अवश्य कहूँगा कि आप सभी लोग अपना धंधा व्यवहार छोड़कर आये है इसलिये आप सभी का कल्याण हो ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

कांकरिया मंदिर : यहाँ के मंदिर में हनुमान दादा विराजमान हुये हैं । इस मंदिर में जिनलोगोंने सेवा की है उन लोगों के घर का रूप स्वयं बदल गया । कारण यह कि वे भगवान के लिये अपना सर्वस्व अर्पण किये हैं । जो भगवान का ख्याल रखते है, उनका भगवान ख्याल रखते हैं । जो व्यक्ति मंदिर के लिये या भगवान के लिये सेवा करते हैं वही सेवा भगवान के पास लिखी जाती है । कितने लोग कहेते हैं कि इतने मंदिर क्यों ? इसका कारण मात्र यही है कि मंदिर एक बनता है लेकिन उसमें आनेवाले जितने हैं वे सभी एक-एक मंदिर बनजाते है, वह इसलिये कि मंदिर से संस्कार धर्म, शांति, सुख सभी प्राप्त होता है ।

धन, सत्ता, पद, शरीर यह सभी नाशवंत है . लंबे समय तक यह नहीं रहता है । समय बीतते नष्ट हो जाता है । परंतु भक्त की पदवी कोई नहीं ले सकता है । भक्त की विरुदावली नित्य की है । इस मंदिर के दोनो संत तथा उनके मंडल पर श्रीजी महाराज खूब प्रसन्न हुये हैं । कारण यह कि श्री नरनारायणदेव के इस मंदिर में दोनो संतो ने खूब सेवा की है । यही सच्चाज्ञान एवं सच्चा वैराग्य है । बाकी ज्ञान-वैराय की बात तो चर्चा मात्र है ।

सामने बैठे हुये को ही नही बल्कि पीछे बैठे हुये सभी सभाजन को श्रीजी महाराज सुखी करे ऐसी प्रार्थना ।

आदि आचार्य प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्रीकी महत्ता



- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवानने अपने स्थान पर ऊद्धव संप्रदाय की धर्मधुरा को सम्हालने केलिये जिन आचार्य महाराजश्री की नियुक्ति किये हो, उनके गुण, ऐश्वर्य, प्रताप सामर्थ्य इत्यादि का कोई माप दंडनही हैं। जो श्रीहरि के समान हो उन्हें ही सत्संग का कार्य भार देंगे। श्री रामप्रतापभाई को नन्दराम, अयोध्याप्रसाद, ठाकुरप्रसाद ये तीन पुत्र थे। जिसमें अयोध्याप्रसादजी पर श्रीजी महाराजकी विशेष दृष्टि थी। इसलिये उन्हें दत्तक पुत्र स्वीकार करके श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान के पीठाधिपति के स्प में नियुक्त कर दिया। इतना ही नही परंतु गढडा में श्रीजी महाराजने श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज को वचन भी दिया था कि "तमारा पक्षमां हुं छुं ते हुं तमारी सहाय करीश तमारो नरनारायणदेव देश घणो वृद्धि पामशे। तमे कोई प्रकारनी चिंता करशो नहीं।" ऐसा कहकर श्रीजी महाराज खड़े होकर आचार्यश्री को गले लगा लिये और कहे कि "जेना पक्षमां हुं छुं तेने कोई प्रकारनुं दुःख के मुंझवण नहि आववा दउं। मारो दृढ विश्वास राखजो। हुं सदा तमारी समीपे रहीश। तमारो बधो व्यवहार हुं चलावीश। (स.गु. श्री निर्गुणदासजी स्वामीनी वातो ३४३)

एक समय कोई ब्राह्मण भक्त अहमदाबाद मंदिरमें श्री नरनारायणदेव का दर्शन करने आया। श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके किसी संत से मिलने गया। संतने कहाँ कि प.पू. महाराजश्री अपनी गद्दी पर विराजमान हैं। दर्शन करके जाओ। यह सुनकर ब्राह्मण के मन में हुआ कि मैं ब्राह्मण हूँ तथा महाराजश्री भी ब्राह्मण हैं। उस में भी हमारे इष्टदेव भगवान रामचन्द्र हैं। तो स्वामिनारायण संप्रदाय के आचार्य का दर्शन करने क्यों जाऊँ। ऐसा विचार करके दर्शन् किये विना यह वात संत से गुप्त रखकर घर चला गया।

ब्राह्मण घर जाकर सोया तो उसी समय उसे स्वप्न में भगवान रामचन्द्र आकर कहे कि भक्त! मेरे साथ चलो। आगे श्री रामचन्द्र भगवान तथा पीछे वह ब्राह्मण भक्त। भगवान रामचन्द्र अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव का दर्शन् कराकर बाद में उस ब्राह्मण को प.पू. श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज के पास ले गये। प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री मंद-मंद हंसते हुए कहने लगे कि आप ब्राह्मण तथा हम ब्राह्मण यह वात सत्य है। परंतु हम तो सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान के पुत्र हैं तथा श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान के आचार्य है।

इस तरह अज्ञात वात को भी जानकर वात करने का सामर्थ्य तो धर्मवंशी आचार्य में ही संभव है। महाराजने सम्पूर्ण अपना प्रताप धर्मवंशी आचार्य में दिया हैं। प.पू. आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री का जन्म द्विशताब्दी एवं धर्मकुलवंदना महोत्सव में तन, मन, धन से सेवा करके महोत्सव का सुख प्राप्त करे। ता. १ से ३ जून ज्येष्ठ शुक्ल-९ से ११ तक चलने वाले उत्सव की आतुरता से प्रतीक्षा करें।

मूर्ति प्रतिष्ठा एवं शहर चोर्याशी महोत्सव
श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया-अहमदाबाद
ता. २५-२-२००९ से ता. १-३-२००९

परेश तथा गोरांगभाई पटेल (नरनारायणदेव यु.मं. कांकरिया)

सर्वावतारी भगवानश्री स्वामिनारायण ने सर्व जीव हितावहः की दिव्य कामना से अहमदाबाद महानगर में विश्वका सर्व प्रथम मंदिर निर्माणकराकर उस मदिर में महा प्रभु श्री नरनारायणदेव को अपनी बांहो में भरकर संवत् १८७८ फाल्गुन शुक्ल तृतीया को प्रतिष्ठित कियाथा। उसकेबाद कांकरिया सरोवर की पवित्र भूमिपर हजारो ब्राह्मणों को भोजन कराकर तृप्त कर दिया था। श्रीहरि जिस वृक्ष के नीचे बैठकर ब्राह्मणों को दक्षिणा दिये थे वहीं पर आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्रीने श्री स्वामिनारायण भगवान के चरणारविंद के साथ श्री बालस्वरूप कष्टभंजन देव की स्थापना की।

इस पवित्र स्थान को अधिक जागरूक करने की भावना से आज से करीब २७ वर्ष पूर्व प.पू. बड़े महाराजश्री संतो को आज्ञा देकर संगमरमर के पत्थर से मंदिर बनवाकर उसमें श्री राधाकृष्णदेव-हरिकृष्ण महाराज की स्थापना किये।

"जगत में मंदिर-मनुष्य की आस्था का केन्द्र हैं"। मनुष्य को धर्म तथा संस्कार की पुष्टि मंदिर से मिलती है। मन की शांति तथा आध्यात्मिक उन्नति मंदिर में भगवान के दर्शन-पूजन से होती है। इस हेतु प.पू. बड़े महाराजश्रीने स्वा. गुरुप्रसाददासजी (महंत) तथा को. स्वामी आनंदप्रसाददासजी को ब्रह्म भोजन कराने के लिये तथा स्थापत्य कला के अनुसार मंदिर निर्माण का आज्ञात्मक शुभ आशीर्वाद दिये। परिणाम स्वरूप मंदिर पूर्ण होते ही महाराजश्री के वरद हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा विधि धूमधाम से संपन्न हुई। इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानकी कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं अ.नि. स.गु. शा.स्वा. हरिगोविंददास तथा स.गु. स्वा. माधवप्रसाददासजी की प्रेरणा से कांकरिया के सत्संगी तथा अन्य सत्संगियोंने मंदिर में बालस्वरूप घनश्याम महाराज, विघ्न विनायकदेव, श्री राधाकृष्ण हरिकृष्ण महाराज इत्यादि सभी के पाटोत्सव तथा ब्रह्मभोजन के महोत्सव में सहयोग दिया था। नूतन मंदिर का उद्घाटन वेदोक्त विधि से प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से संपन्न हुआ।

इस महोत्सव के उपलक्ष्य में ता. २२-२-०९ के दिन सर्व रोग निदानकेम्प का आयोजन डॉ. रमेशभाई की देखरेख में रखा गया था। जिसका हजारों लोगोने लाभ लिया था।

कांकरिया मंदिर के महंत स्वा. गुरुप्रसाददासजी तथा महंत स्वा. आनंदप्रसाददासजी के नेतृत्व में ता. १४-२-०९ के दिन नूतन मंदिर के प्रांगण में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से विजय स्तंभ की स्थापना हुई थी। इस महोत्सव के उपलक्ष्य में बाल स्वरूप कष्ट भंजन देव महाप्रभु का महा अभिषेक किया गया था।

इस नव निर्मित मंदिर में पत्थरों से शिल्पशास्त्रानुसार कार्य हुआ है। मंदिर के शिखर पर सुंदर कलश तथा ध्वजदंड सुशोभित हो रहा है।

ठाकुरजी का दरवाजा एवं सिंहासन सुवर्ण मंडित है। इस कार्य को पूर्ण करने में मंडल के संत आनंदप्रसाददासजी स्वा. देवकृष्णदासजी, स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी तथा पार्षद नरोत्तम भगत इत्यादि संतोने रात-दिन अथक परिश्रम करके मंदिर कार्य शीघ्रपूर्ण हो इस भावना से लगे रहे। मंदिर में २६४ कमान, विविध नक्काशी तथा भव्य द्वार बनाया गया है। भगवान स्वामिनारायण ने जैसा निश्चित किये थे वैसा ही ता. २५-२-०९ के शुभ दिन सूर्यनारायण प्रगट होने के साथ ही दिव्य मंगल गीत होने लगे। भक्तों का काफिला आने लगा। स्वयं सेवक कार्यलय, पूछताछ कार्यलय, सभामंडप मेडिकल, दान भेंट, साहित्य केन्द्र, भोजनालय, जैसे स्थलों पर करीब ८०० स्वयं सेवक अनुशासित ढंग से कार्य कर रहे थे।

ता. २५-२-०९ बुधवार के प्रातःकाल ७-०० बजे पारायण के यजमान श्रीहरि किशनभाई पीताम्बरदास ठक्कर के निवास स्थान मणीनगर से पोथीयात्रा निकली। इस यात्रा में लाखों भक्तजनों से मेदिनी भर गई थी। सारा वातावरण बैन्डवाजा तथा भजन मंडली की धुन से गूंज उठा था। पारायण के वक्ता स.गु. शा.निर्गुणदासजी तथा स.गु. शा. पी.पी. स्वामी एवं संहितापाठ के संत भी इस यात्रा में साथ थे। पोथीयात्रा कांकरिया फुटबोल ग्राउन्ड पहुंची उस समय भक्तों की संख्या वहाँ समा नही रही थी।

कांकरिया फूटबोल ग्राउन्ड के मैंदान में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव के अन्तर्गत ५०० बाय १०० का एक विशाल सभा मंडप बनाया गया था। बद्रिनारायण के महंत शा. गोलोकविहारीदासजी तथा प्रफुल्ल खरसाणी के मार्गदर्शन में १०० बाय ४० फूट का सुंदर स्टेज तैयार किया गया था।

प्रथम दिन संप्रदाय के प्राण समान प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा जिस के संकल्प से कार्यपूर्ण हुआ ऐसे प.पू. बड़े महाराजश्री के सभा मंडप में पधारते ही श्री नरनारायणदेव की जयघोष से सारावातावरण दिव्य हो गया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री के साथ भुज, अहमदाबाद, जेतलपुर मंदिर के महंत स्वामी दीप प्रागट्य करके मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव का शुभारंभ किये थे।

पंचाह्न भागवत के वक्ता स्वा. निर्गुणदासजी तथा शा.स्वा. पी.पी. स्वामी जब व्यासासन पर विराजमान हुये उस समय यजमान परिवार द्वारा पूजन-अर्चन किया गया था। ५१ संहितापाठी पूज्य संतो का दिव्य दर्शन हो रहा था। प्रथम दिन विशिष्ट महानुभावों का संमान किया गया था। भुज मंदिर के महंत स्वामीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था। इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्रीने अपने आशीर्वचन में बताया कि जिस तरह श्रीहरिने इसी स्थान पर ब्रह्म भोज का आयोजन किया था ठीक वैसा ही दिव्य स्वरूप परिलक्षित हो रहा है। यहाँ पर विराजमान कष्ट भंजन देव तथा हरिकृष्ण महाराज आप सभी के मनोरथ को पूर्ण करेंगे। इस महोत्सव में गढपुर मंदिर के चेरमेन एस.पी. स्वामी संतो के साथ पधारे थे। रात्रि सांस्कृतिक कार्यक्रम में दिनेश वघासिया तथा टी.वी. कलाकर देवांग पटेल ने हास्य रस द्वारा सभी के मन को जीत लिया था। ता. २६-२-०९ गुरुवार को प्रातः ठाकुरजी के सांनिध्य में महापूजा का आयोजन किया गया था। महापूजा की पूर्णाहुति जूनागढ के वयोवृद्ध स्वा. हरिनारायणदासजी तथा कांकरिया मंदिर के महंत स्वामी के वरद हाथों से हुई थी। बहनोंकी गुरु अ.सौ. ल.स्व. गादीवालाजी पधारकर बहनोंको दर्शन का सुख प्रदान कि थीं। मध्याह्नके बाद भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव को धूमधाम से मनाकर आरती उतारी गई थी। इस प्रसंग पर गढपुर के को. घनश्याम वल्लभदासजी ने सभा को संबोधित किया था। रात्रिमें सांस्कृतिक कार्यक्रम का सुखद आनंद सभी ने लिया था।

ता. २७-२-०९ शुक्रवार प्रातः ८-०० बजे शा. राजेन्द्रभाई शुक्ल द्वारा वेदोक्त विधि से महाविष्णुयाग का आरंभ तथा यजमानों के देह की शुद्धि सम्पन्न हुई थी। सभी भक्तों के गुरु प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद हाथों से याग कर्म आरंभ हुआ था। यज्ञशाला का मार्गदर्शन बद्रिनाथ के महंत स्वा. गोलोकविहारीदास तथा स्वा. राजेन्द्रप्रसाददासजीने किया था।

प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभा मंडपमें विराजमानहोकर दाताओं को संमानित किया था। इस प्रसंग पर जूनागढ मंदिर के को. स्वा. देवनंदनदासजी के साथ मांगरोल, माणावदर, वडिया इत्यादि स्थलों से संत पधारे हुये थे। रात्रि का सांस्कृतिक कार्यक्रम श्री सहजानंद गुरुकुल असारवा के विद्यार्थीयों द्वारा संपन्न किया गया था।

ता. २५-२-०९ शनिवार के दिन ७-३० बजे कांकरिया तालाब से यज्ञशाला तक भगवान के अभिषेक हेतु कलशयात्रा का आयोजन किया गया था। जिस में



हजारों बहनो ने भाग लिया था । दोपहर में ३ बजे भव्यातिभव्य शोभायात्रा मणीनगर के राजमार्ग पर निकली थी । इस शोभायात्रा में बेंड बाजा के साथ कीर्तन मंडली, १५ ट्रेक्टर ट्रक तथा अन्य साधनों को सुंदर ढंग से सजाया गया था, जिस पर पूज्य संत तथा हरिभक्त बैठे हुये थे । अलंकृत घोड़े पर नरनारायणदेव युवक मंडल के सदस्य थे । दूसरे ट्रैकक्टरों में भगवान की मूर्तियां थी । किसी पर भजन मंडली तो किसी पर अन्य शोभा से अलंकृत करके संप्रदाय केधर्मगुरु प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री विराजमान होकर दर्शन दे रहे थे । इस शोभायात्रा का दिव्य दर्शन करने के लिये आये हुये देवताओं ने आकाश से पुष्प वृष्टिकी थी । इस शोभायात्रा में करीब ५०००० जितने भक्त उपस्थित थे । अहमदाबाद शहर मणीनगर विस्तार में ऐसी प्रथम यात्रा देखकर नगरजनों के आनंद की सीमा न रही । शोभायात्रा में लाखो स्त्रयों के फटाकड़े फोड़े गये थे । मंडल द्वारा शोभायात्रा में ठंढे पानी पीने की व्यवस्था की गयी थी । सायंकाल ८-०० बजे वापस आने के बाद भक्तों ने प्रसादग्रहण किया था ।

ता. १-३-०९ रविवार को जिन्हे वर्षो से इस उत्सव की प्रतीक्षा थी ऐसे हरिभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित होने लगे ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव प्रातः ७-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के बरद हाथों से संपन्न हुआ, उस समय श्री नरनारायणदेव के जयघोष से तथा सहनाई की आवाज से सारा वातावरण सुहावना हो गया था । मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का महा अभिषेक किया गया था ।

श्री हनुमानजी, गणपतिजी, सुवर्ण कलश, ध्वजदंड की प्रतिष्ठा भी की गई थी । दर्शन की सुंदर व्यवस्था की गई थी । बाद में प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद हाथों से कष्टभंजन देव का महाभिषेक किया गया था । ९-३० मिनट पर ठाकुरजी की श्रृंगार आरती प.पू. आचार्य महाराजश्रीने उतारी थी । इस के बाद प.पू. महाराजश्री ने यज्ञ की पूर्णाहुति में नारियल का होम किया था । शास्त्रानुसार पताका के दर्शन में देवदर्शन होता है इसलिये कलश एवं पताकाये मंदिर के शिखर पर चढाई गई थी।

इस महोत्सव प्रसंग पर आयोजित पंचाह्न भागवत कथा की पूर्णाहुति प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से संपन्न हुई थी । सभी दाताओं का इस अवसर पर संमान किया गया था । इस प्रसंग पर अहमदाबाद, जेतलपुर मंदिर के महंत स्वामी तथा शा. निर्गुणदासजी, शा.स्वा. पी.पी. स्वामी तथा अन्य संत मिलकर कांकरिया मंदिर के महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी एवं स्वा. आनंदप्रसाददासजी तथा यज्ञप्रकाशदासजी का संमान किये थे । कांकरिया एवं साबरमती विस्तार के भक्तों ने भी महंत स्वामी के मंडल को ताम्रपत्र अर्पण किया था । प.पू. आचार्य महाराजश्री ने दोनों महंत स्वामीनों को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । इस प्रसंग पर मूली के वयोवृद्ध संत नरनारायणदासजी विशेषस्र से उपस्थित थे । इस अवसर पर कालुपुर, जेतलपुर, छपैया, धोलका, मूली इत्यादि स्थलों से आये हुये संतोने अपनी अमृतमयी वाणी का लाभ दिया था ।

प.पू. आचार्य महाराजश्रीने अपने ज्ञानोपदेश में बताया कि मंदिर भक्तों की आस्था का केन्द्र है । इस अवसर की प्रायः सभी भक्तों को प्रतीक्षा थी । आज के दिन भगवान स्वामिनारायण ने इसी स्थल पर ब्रह्मभोज करके ब्राह्मणों को प्रसन्न किया था । आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्रीने स्वामिनारायण भगवान के चरणारविंद के साथ बालस्वस्र कष्टभंजन देव की स्थापना की थी तथा आज श्री राधाकृष्ण हरिकृष्ण महाराज की भी स्थापना हो गई । आज प्रातः बाल स्वस्र घनश्याम महाराज की प्रतिष्ठा होते ही वातावरण अलौकिक हो गया है । बाद में दोनों महंत स्वामी तथा देवकृष्ण स्वामी एवं यज्ञप्रकाश स्वामी का आभार माने थे । इस महोत्सव में अहमदाबाद, जेतलपुर, मूली, भूज, नारायणघाट, नारायणपुरा, वडताल, गढपुर, तथा जूनागढ इत्यादि स्थानों से संत पधारे थे ।

इस उत्सव का संचालन शा.स्वा. पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन में स्वा. यज्ञप्रकाशदासजीने किया था ।

इस सभा में मथुरा मंदिर के स.गु. महंत स्वामी भानुप्रसाददासजी, कारियाणी से भक्तिप्रसाददासजी । स्वा. प्राणजीवनदासजी स्वा. देव स्वामी (मांगरोल) स्वा. जयवल्लभदासजी, महंत के.पी. स्वामी (जेतलपुर) स्वा. नारायणचरणदासजी तथा पार्षद नरोत्तम भगत इत्यादि संत मंडल ने अलग-अलग सभी व्यवस्थाओं को बड़े सुचारुढंग से संम्हाल कर उत्सव को प्रकाशमान बना दिया था ।

કાંકરિયા મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા તથા શહેર ચોર્યાસી મહોત્સવ







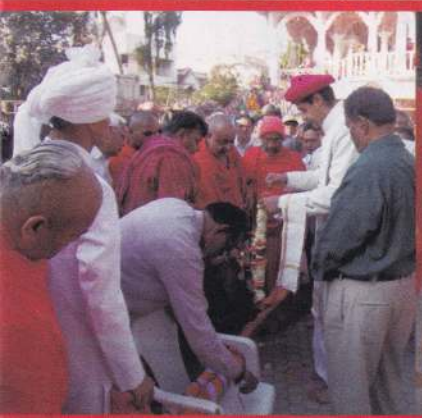








બાળ સ્વરુપ કષ્ટભંજન દેવ અભિષેક - આરતી પ.પૂ.મહારાજશ્રી તથા લાલજી મહારાજશ્રીના વરદ્ હસ્તે







શ્રી હરિના અપર સ્વરુપોના આશીર્વચન








પોથીયાત્રા





ઉદ્‌ઘાટન સમારોહ

પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રી, પ.પૂ.મહારાજશ્રી અને યજમાન દ્વારા વ્યાસપીઠનું પૂજન










કાંકરિયા મહોત્સવ પ્રસંગે મહાનુભાવ સંતો અને





બન્ને વક્તાશ્રીઓના મુખે કથા શ્રવણ કરતા હરિભક્તો



ભૂજ મંદિરના મહંત સ્વામી કાંકરિયા મંદિરના મહંત સ્વામી નું સન્માન કરતા



વિધાનસભાના અધ્યક્ષ શ્રી અશોક ભટ્ટનું સન્માન કરતા કાંરકિયા મંદિરના મહંત સ્વામી



ગુજરાત પોલિસ મહાનિર્દેશક શ્રી ખંડવાવાલાનું સન્માન







ભજન સંધ્યા અને અસારવા ગુરુકુળના વિદ્યાર્થીઓ દ્વારા સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ







રાજકીય મહાનુભાવો પોતાની ભાવના વ્યક્ત કરતા









બન્ને વક્તાશ્રીઓનું સન્માન
પ.પૂ.મહારાજશ્રીના વરદ્ હસ્તે

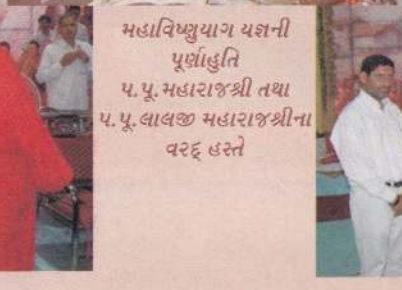




ગુરુપ્રસાદ સ્વામી તથા આનંદ સ્વામીનું સન્માન
કાલુપુર મંદિર તથા સમસ્ત સંત સમાજ તરફથી
પ.પૂ.મહારાજશ્રીના વરદ્ હસ્તે



ગુરુપ્રસાદ સ્વામી તથા આનંદ સ્વામીનું સન્માન
કાંકરિયા સમસ્ત સત્સંગ સમાજ તરફથી
પ.પૂ.મહારાજશ્રીના વરદ્ હસ્તે

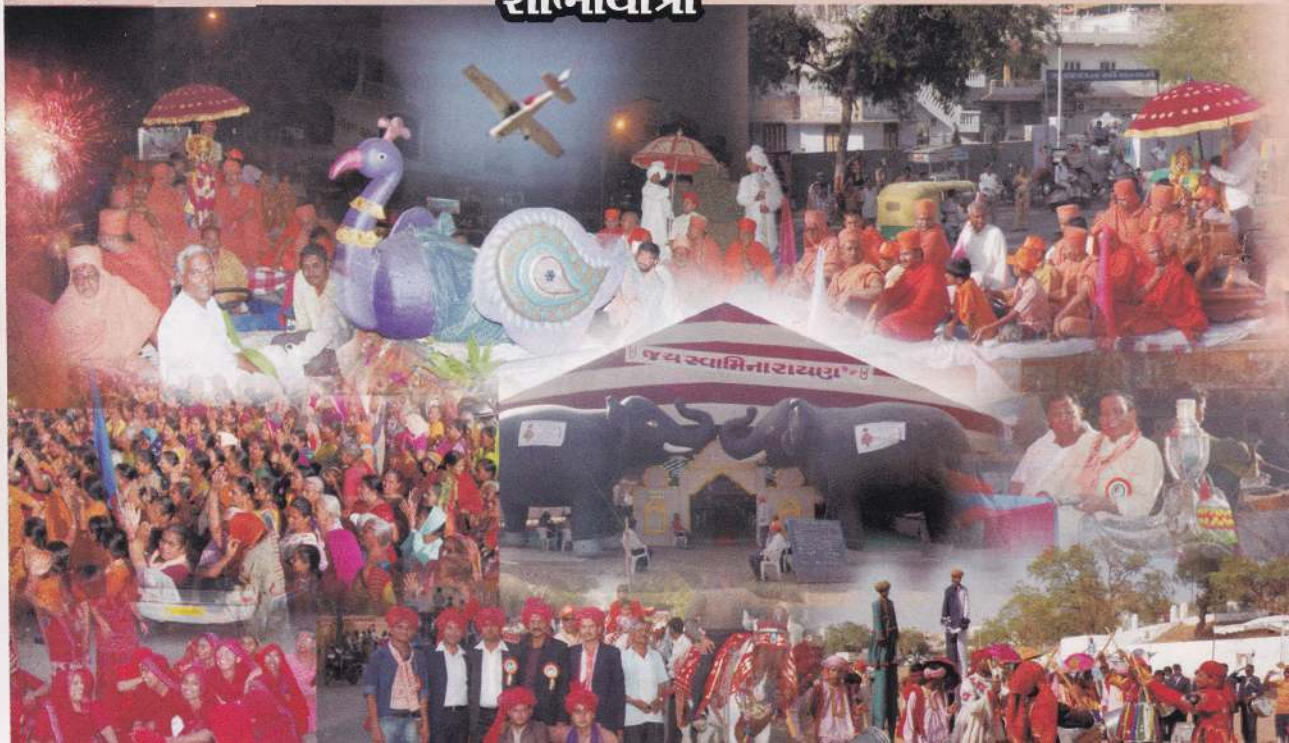


મહાવિષ્ણુયાગ યજ્ઞની
પૂર્ણાહુતિ
પ.પૂ.મહારાજશ્રી તથા
પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રીના
વરદ્ હસ્તે



પ.પૂ.મહારાજશ્રીના વરદ્ હસ્તે યજમાન પરિવાર તથા
અગ્રણીય હરિભક્તોનું સન્માન

શોભાયાત્રા



देयर-भाभी का प्रेम

- चन्द्रकांतभाई पाठक (गांधीनगर)

श्री रामचन्द्र भगवानने जिस भूमि को अपने चरणरज से पवित्र किया था । उसी अयोध्या में श्री घनश्याम महाराज प्रतिदिन भ्रमण करते रहते थे । प्रभावी व्यक्तित्व होने से अपरिचित व्यक्ति भी उन्हें बुलाते थे । परंतु वे मर्यादित वात करते । अपने से बड़ो का चरण स्पर्श करते । जिसमें त्याग की भावना देखते उसके साथ संबन्ध रखते । इनके मन के साथ मेल केवल दो व्यक्ति से हुआ था उन में से प्रथम थे भुवानदीन ब्राह्मण तथा द्वितीय थे दीना संग क्षत्रिय । दोनो शुरवीर एवं परोपकारी थे । स्वार्थ की भावना उनके हृदय में थोड़ी भी नही थी। उन लोगो से घनश्यामजी का अच्छा मित्र भाव था ।

एक दिन सुवासिनी भाभी बैठे बैठे साग सवार रही थी । उस समय घनश्यामजीने कहा, भाभी आपको एक बात कहूँ । भाभीने कहा हाँ, रायगंज बजार में एक अखाड़ा प्रारंभ हुआ है दो भाई अपने घर में ही अखाड़ा चला रहे हैं । एक का नाम है भुवानदीन ब्राह्मण दूसरे का नाम है दिनासंग क्षत्रिय । दोनों मल्ल विद्या जानते हैं । दूसरे को सिखाते भी है । दोनो खूब होशियार है । मैं उनके पास जाकर कहा कि हमें भी मल्ल विद्या सिखाइये । उन दोनों ने कहा भाई अभी तुम बहुत छोटे हो । अभी तुम्हारी उम्र स्कूल में पढने लायक है । कहाँ रहते हो ? किसके लड़के हो ? ये सभी पूछा । बाद में मैने पिताजी का नाम बताया कि मेरे पिता का नाम श्रीहरिप्रसाद पाण्डेय हैं । बड़े भाई का भी नाम बताया । बरहट्टा में हम रहते हैं । पिताजी का नाम सुनकर प्रसन्न हो गया । उसने कहा कि पहले घर पूछकर आओ तो मल्ल विद्या सिखाउँगा । तो भाभी आप कहिये मल्ल विद्या शीखने जाऊँ । सुवासिनी भाभी घनश्याम को पास बुलाकर गाल का चुंबन की मस्तक पर हाथ फेरी और कहने लगी, ठीक है मेरे वीर ? जाना, लेकिन अपनी नाजुक शरीर का ख्याल रखना । कल से ही प्रारंभ कर दो । भाभी मैं मल्ल विद्या में जाऊँ तो भाई नाराज तो नहीं होंगे ? वे मनाकर दिये तो ? वे मना नही करेंगे । आप के ऊपर बहुत प्रेम है । बाद में घनश्यामजीने कहा हम कल प्रातः से ही प्रारंभ कर देंगे । यह सुनकर भाभीने हाँ कह दिया । देवरजी अब आपजो कहेंगे वही सब करेंगे । कल से सब तैयार मिलेगा । आप चिंता मत करो । अब कोई प्रकार का संकोच नहीं रखना । ऐसा कहकर भाभी चलने लगी तो घनश्याम उनके गले लिपट गये । भाभी भी उन्हे खूब प्रेम करने लगी तो घनश्यामने पूछा कि भाभी राम रज का मतलब क्या है । राम रज का मतलब भस्म । उसे मिट्टी की रज भी कहते हैं । ऐसे क्यों पूछे ? वह इसलिये कि कसरत करने से पहले शरीर में रामरज लगानी पड़ती है ।

इस तरह श्रीहरि मल्ल विद्या प्रारंभ कर दिये । नित्य प्रति भिगोया हुआ चना तथा दूध लेकर जाते । वहाँ जाकर शरीर में मिट्टी लगाते, कसरत करते, चना खाये और दूध पीते । भूवानदीन तथा दीनासंग दोनो उन्हें दाव पेच सिखाते । यह प्रक्रिया प्रतिदिन की हो गयी । जितनी भी मल्ल विद्या के दाव पेच थे वे सभी श्रीहरि ११ वर्ष की उम्र में शीख लिये । भुवानदीन तथा दीनासंग राजा के कहने से अयोध्या की रक्षा भी करते थे । प्रजा में काफी लोक प्रिय थे । सभी बड़े संमान के साथ देखते घनश्यामभी कभी-कभी अखाड़े में मिलने जाते । (क्रमशः)

हरि भजन से महानता प्राप्त हो

- शा. अभयप्रकाशदास गुरु स्वा. देवप्रकाशदासजी (महंत नारायणघाट)

इस संसार में प्रत्येक मनुष्य ऐसी इच्छा करता है कि मुझे मान-सन्मान मिले, मेरी कीर्ति फैले, जगत में मेरा नाम रहे। इन सभी की प्राप्ति के लिये कुछ न कुछ सभी प्रयत्न करते रहते हैं। कितनों को हम जानते नहीं है कि वे महत्तम स्थान को किस तरह प्राप्त किये। लेकिन जिन्होने भगवान की भजन की है, भगवान को प्रसन्न किया है, उन सभी भक्तों को हम जानते हैं यद्यपि उनके हजारों वर्ष बीत चुके हैं तथापि नाम की स्मरणिका कहीं न कहीं मिलती है -

अपने शास्त्रों में नव प्रकार की भक्ति कहीं गई है

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पाद सेवनम्।
अर्चनं वंदनं दास्यं सख्यमात्म निवेदनम्॥

इन नव प्रकार की भक्ति में से कोई एक भी भक्ति का आश्रय लेकर लोग महान पद को प्राप्त किये हैं। भगवान के साथ अनन्य स्नेह को भक्ति कहते हैं। गोपियों का भगवान श्री कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम था। इसलिये भागवत जैसे शास्त्र में गोपियों को स्थान मिला। जिसे हजारो वर्ष बीत जाने पर हम गोपियों की गाथा गाते रहते हैं।

इस लिये मुक्तानंद स्वामीने भी अपने कीर्तन में लिखा है कि -

हरिभजता सहु मोटप पामे,
जन्म मरण दुःख जाये रे,
पारस परसी लोह कंचन थई
मोजे मूले वेचाय रे.... हरि भजता।

स्वामी कहते है कि मनुष्य चाहे जैसा हो यदि भगवान की भजन करता है तो महान पद को प्राप्त कर लेता है। जैसे लोहे का पारसमणी से संपर्क होते ही अमूल्य सुवर्ण हो जाता है।

स्वामी नारदजीका दृष्टांत देते हुये कहते हैं -

मुनि नारदनी जात ने जोता,
दासी पुत्र जग जाणे रे,
श्रीहरिने भजी हरिनुं मन केवाणो,
वेद पुराण वखाणे रे।

नारदजी पूर्व जन्म में दासीपुत्र थे लेकिन भगवान का सच्चे हृदय से भजन करने से दासीपुत्र से दूसरे जन्म में ब्रह्मा के मानसपुत्र नारद मुनि हुये। भगवान की भजन करते करते स्वयं भगवान के मन हो गये।

राधाजी भी भगवान श्रीकृष्ण के साथ अनन्य प्रेम भक्ति की तो आज भी सारा जगत पहले राधाजी का नाम बाद में भगवान का नाम लेकर राधाकृष्ण के नाम की भजन करता है।

अर्जुन भी भगवान के साथ सखा भाव रखकर जगत में अमर हो गये। जिसका नाम श्री स्वामिनारायण भगवान शिक्षापत्री में लिखे कि अर्जुन के साथ भगवान नारायण हों तो नर एवं नारायण ऐसा समझना। कहने का अभिप्राय यह कि जो भी उच्च स्थिति को प्राप्त हुये वे मात्र भगवान की भक्ति से, तो हम भी भगवान की भक्ति करके उन्हीं के चरण का दास बने ऐसी अभ्यर्थना।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

जहाँ भाव वहाँ भगवान

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

भगवान श्री स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री में कहा है कि मंदिर में आकर ग्राम्यवार्ता आर्थात् जगतव्यवहार की वात करनेसे भगवान का अपराध होता है। शाग बनाये हो, दाल बनाये हों, कढी बनाये हों तो इसमें नमक अवश्य डाले होंगे लेकिन मोहनथाल मिठाई में या जलेबी में बूंदी के लड्डु में नमक डालेंगे ? मूली में नमक डालेंगे, लेकिन केला में डालेंगे ? जगत व्यवहार के लिये सारा संसार है या अपना घर है लेकिन भजन भक्ति के लिये तो मंदिर हैं। शिक्षापत्री में भगवान श्री स्वामिनारायण ने कहा है कि "मंदिर में कभी ग्राम्यवार्ता नहीं करनी चाहिये।" लेकिन जिसके घर में भगवान याद आते हों ऐसे भक्त के घर के चौखट में कोई प्रवेश करजाय तो उसका कल्याण हो जायेगा। स्वामिनारायण भगवान का वचन है कि "हमारे सत्संगी के घड़े का यदि कोई पानी पीयेगा तो उसका भी कल्याण होगा। लेकिन वह सत्संगी घड़ा भरते समय स्वामिनारायण..... स्वामिनारायण ..... बोलता हो तो।

अपने सत्संग में एक सुप्रसिद्ध घटना है, ग्राम्य विस्तार के किसान परिवार की, किसानो में एक परंपरा होती है, पुरुष वर्ग प्रातः खेत में चला जाता है। बहनें दोपहर में भोजन बनाकर दौरी में रखकर खेत में ले जाती है।

कई विस्तारों में तो ऐसा कहा जाता है कि "पाथेय लेकर गई।" सत्संगी बहन पति के लिये तथा अन्य कुटुंम्बियों के लिये भोजन बना रही थी, उस समय स्वामिनारायण ..... स्वामिनारायण ..... मंत्र जाप करती जा रही थी। एक रोटी ऐसी फूली कि उसके मन में यह भाव आ गया कि यह रोटी भगवान स्वामिनारायण जिमें तो अच्छा रहता। ऐसा विचार करके सभी भोज्य पदार्थ दौरी में रखकर खेत के लिये चल पड़ी। रास्ते में दूर से किसी घुड़सवार को आते देखी। दोपहर का समय, सूनसान रास्ता, थोड़ी डर अवश्य लगी, लेकिन उसने देखा कि घुड़सवार के माथे पर पगड़ी, सुनहरा चमकीला वस्त्र, कन्धेपर दुपट्टा इत्यादि को देखकर कहने लगी कि भगवान स्वामिनारायण के सिवाय ऐसा कौन पहनता है। इतने में भगवान तो माणकी घोड़ी पर सवार सामने आकार खड़े हो गये। बहन बड़े आश्चर्य में पड़ गई, अरे महाराज ? आप यहाँ खेतों में ? अब वह बड़ी जल्दी से माथे का भार उतारकर महाराज का चरण वन्दन करती है। महाराजने कहा जल्दी रोटी खिलाओ बड़ी जोर की भूख लगी है। महाराज रोटी तैयार है, तो दो, नहीं यह नही, जो मेरे लिये बनाई थी वही रोटी, नही महाराज यह सभी आपके लिये है। नहीं, हमारी रोटी भीतर है। सभी रोटी आगे पीछे की उसमें से महाराज पहचान कर कहे कि यह मेरी रोटी है। तुम जब रोटी बना रही थी उस समय यह कही थी न, कि यह मेरे महाराज की है। वही रोटी लेकर महाराज प्रसाद के स्प में ग्रहण करने लगे। बहन ने कहा महाराज ? ऐसी जो रोटी हो वह मैं निकाल कर देती हूँ। इतना कहकर ज्यों वह मस्तक नीचे की, कि महाराज अदृश्य हो गये।

सज्जनों ! स्वामिनारायण भगवान सदा प्रत्यक्ष विराजमान हैं। जिंदगी में कोई भी कार्य करते समय विशेष स्प से रसोई बनाते समय भगवान का स्मरण हो तथा यह भाव आजाय कि यह भोज्य पदार्थ भगवदर्थ है तो वह सम्पूर्ण भोजन प्रसाद स्प हो जाता है। उसे भगवान स्वीकार कर लेते है। इसमें शंका का स्थान नहीं है।

कितनी बार तो अपने ग्राम्य विस्तार में कहीं नेत्रयज्ञ चलता रहता है, कहीं दंत यज्ञ चलता रहता है तो कही रोग निदान केन्द्र चलता है, इसी तरह कथाश्रवण भी जिंदगी में सत्संग तथा भक्ति को प्रगट करने का केम्प

है । चाहे जैसी स्थिति हो पर जिन्दगी को इस तरह संवारना चाहिये कि जो भी आप भोजन रसोई में तैयार करे वह भगवदर्थ हो और भगवान वहाँ उस भोज्य पदार्थ को ग्रहण करने अवश्य पधारे । आप मंदिर में जांय और भगवान आपको प्रत्यक्ष दर्शन दें, इसी प्रकार की भक्ति प्रगट करने आजाय तो भवसागर से बेड़ा पार हो जाय ।

स्वभाव परिवर्तन का सरल उपाय

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

चिन्टूः - स्वामिनारायण भगवान की कृपा दृष्टि जिस पर हो जाय उसका भवदुःख दूर हो जाय ।

पिन्टूः - हाँ भाई, होतो हो ।

चिन्टूः - स्वामिनारायण भगवान की जो भजन करता है वह कुल सहित तर जाता है ।

पिन्टूः - हाँ भाई तर सकता है ।

चिन्टूः - स्वामिनारायण भगवान के संतों का संपर्क रखने से संसार में भी सुखी रहेगा ।

पिन्टूः - भाई, यह संभव नहीं है क्योंकि जैसे रस्सीजल जाय तो भी ऐंठन जाता नहीं है, उसी तरह स्वभाव भी नहीं बदला जा सकता देखो, श्री राम के सन्सर्ग में रावण में क्या परिवर्तन आया था ? श्रीकृष्ण के संपर्क में क्या कंस सुधरा ? भगवान के हाथों मरने पर ही मोक्ष हुआ लेकिन स्वभाव बदला नहीं ।

चिन्टूः - अरे ! इस समय तो स्वामिनारायण भगवान हथियार के विना विजई हुये है । अर्थात् कैसा भी दुर्जन हो, कैसी भी उसकी प्रकृति हो तो भी उसके जीवन मे परिवर्तन आया है । अरे इस सत्संग के प्रताप से पशु की प्रकृति भी बदल जाती है ।

पिन्टूः - क्या बात करते हो ? जहाँ मनुष्य नहीं सुधर सकता वहाँ पशु कैसे सुधर सकता है ?

चिन्टूः - तो सुनो गढपुर की घटना सुनाता हूँ । स्वामिनारायण भगवान जिस घोड़ी पर सवार होते थे उस घोड़ी का नाम माणकी था । उस घोड़ी को एक बच्चा था, वह बड़ा हो गया, लेकिन उसको एक कुसंग लग गयी । कुसंग बहुत खराब चीज है । यह किसी रोग से कम नहीं । इसे बुलाना नहीं पड़ता स्वयं आ जाता है । इस घोड़ी के बच्चे में दोष यह था कि उसके बगल से जो भी जाता उसे पैर मारता । अनजान हरिभक्त कोई जाय, उसे खबर नहीं कि यह लात मारता है, खबर हो तो क्यो कोई वहाँ से निकले । सभी अपने मान में बेखबर होकर निलकते और वह बच्चा लात मार देता ।

यह वात भगवान स्वामिनारायण के पास पहुँची कि माणकी घोड़ी का बच्चा जो भी उसके पास से जाता है उसे लात मारता है । प्रायः कितने अन्जान व्यक्ति चोट खाये हुये है । श्रीजी महाराज यह सुनकर कहे कि यह तो ठीक नहीं । स्वयं वहाँ गये और प्रत्यक्ष इस घटना को देखे तो कहे कि यह ठीक नहीं इसकी आदत छोड़ानी पड़ेगी । इसके बाद महाप्रभु ने एक पार्षद से कहा कि जाओ अश्व शावक जिस पैर से मारता है उसमें रस्सी बांधकर आओ । महाराज के कथनानुसार पार्षद ने घोड़े के बच्चे के पैर में रस्सी बांध दिया । अब महाराजने सभा में सभी से कह दिया कि जो भी उस तरफ से आये वह अश्वशावक के पैर में बंधी रस्सी खींचता आये ।

यद तो दादा का दरबार ! यहाँ महाराज के दर्शनार्थ निरन्तर आनेजाने वाले होते ही थे । महाराज के कथनानुसार जो भी वहाँ से जाता वह घोड़े के पैर में बंधी रस्सी को खींचता जाय । यह प्रक्रिया पूरे दिन चलती रहती । परिणाम यह हुआ कि उस अश्व का पैर सूज गया । अंत में ऐसा हुआ कि वह अश्व थक कर पैर मारना छोड़ दिया ।

सज्जनो ! बहुत विचारने जैसी वात है । सत्संग करे, भजन करे, फिर भी अयोग्य स्वभाव कहीं न कहीं रह ही जाता है । हमें भी ऐसे स्वभाव को छोड़ देना चाहिये अन्यथा भगवान तो अवश्य छोड़ायेगें । अब भगवान उस स्वभाव को कैसे छोड़ाते हैं वह उनके ऊपर है । कहीं कड़ी कसौटी कर दिये तो ? इसकी अपेक्षा पहले से सावधान हो जाना श्रेयष्कर है । इस प्रकार के स्वभाव पर भगवान प्रसन्न होकर सदा सहाय करते हैं ।

भक्ति सुधा

प.पू. श्री गादीवालाश्री के जन्मोत्सव निमित एक भावाञ्जलि

- श्री नरनारायणदेवयुवतीमंडल (यु.के.)

प.पू. गादीवालजी (महिला हरिभक्तों की गुरु) द्वारा भगवान श्री स्वामिनारायणने संप्रदाय की महिलाओं पर खूब कृपा की हैं । मोक्ष के मार्ग पर तथाअंत में अक्षरधाम की प्राप्ति के लिए पू. श्री गादीवालाजी सदा महिला हरिभक्तं को मार्गदर्शन देती रही हैं । सनातन धर्म में इस प्रकार की कहीं व्यवस्था देखी सुनी नहीं गई है ।

प.पू. श्री गादीवालाजी (श्री स्वामिनारायण संप्रदाय की महिला गुरु)

चैत्र शुक्ल-६ श्री स्वामिनारायण संप्रदाय में तथा संप्रदायकी महिलावर्ग के लिये बहुत पवित्र दिन है । जो प.पू. गादीवालाजी (प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी की धर्मपत्नी हैं) का प्रागट्य दिन है।

प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प.पू. गादीवालाजी स्वमिनारायण संप्रदाय की महिलाओं को सांप्रदायिक धर्म नियम तथा सिद्धांतो का शिक्षण देकर प्रोत्साहित करती रहती है । विशेष में तो यह कि परमकृपालु परमात्माने जो नियम बताया है उसका अक्षरशः पालन करती है ।

स्वयं भगवान श्री स्वामिनारायण द्वारा प्रस्थापित श्री स्वामिनारायण संप्रदाय की महिला हरिभक्तों में प.पू. गादीवालाजी मार्गदर्शक ही नहीं है अपितुगुरुके स्म में सर्वोच्च स्थान पर भी है ।

प.पू. श्री गादीवालाजी का जन्मदिन किस प्रकार मनाये ।

संप्रदाय की समस्त महिला मंडल द्वारा इस उत्सव को अवश्य मनाना चाहिये । एक महिला हरिभक्त के स्म मं (शिष्य) अपने गुरु की शरणमें जाना चाहिये तथा उनकी सेवा करके आनंद प्राप्त करना चाहिये । प.पू. गादीवालाजी की जितनी अनुयायी महिलाये हैं उनके मुक्ति के मार्ग खुल गाये हैं ऐसा समझना चाहिये । इसलिये भी पू. गादीवाला का जन्म दिन तो अवश्य मनाना चाहिये । इसके निम्ननिर्देश दिये जा रहे हैं ।

- मंदिर में रास-गर्बा का आयोजन करना ।
- मंदिर में भजन कीर्तन के कार्यक्रम में यजमान होना ।
- श्री घनश्याम महाराज का विशेष पूजन करना ।
- विशेष भोज्य पदार्थ अर्पण करना ।
- अपने पूज्य महाराजश्री द्वारा प्रतिष्ठित नजदीक के मंदिरों में दर्शन करने जाना ।
- प.पू. गादीवालजी को अंत:करण पूर्वक याद करके प्रागट्य दिन मनाना ।

●

पूज्य भक्तिमाता

- श्री नरनारायणदेवयुवतीमंडल (यु.के.)

गतांक से चालू...

जब यात्रालु उनेक घर आते तब भक्तिमाता उन्हें आदर पूर्वक कुछ न कुछ देती रहती । इस तरह पूज्य भक्तिमाता एक परोपकारी तथा दीन दु:खभंजन जीवन का प्रत्यक्ष उदाहण थी । सतत सेवा द्वारा पूज्य भक्ति माताजी श्री स्वामिनारायण संप्रदाय में श्रीहरिके साथश्रेष्ठ तथा सर्वोत्तम स्थान प्राप्त की है । पूज्या श्री भक्तिमाता ने बहन भक्ताओं का उद्धार किया है । इसके साथ ही अपने जीवन के अनेक दृष्टांतो द्वारा एक स्त्री को अपने परिवार के प्रति पति, ईश्वर तथा जगत के व्यवहार में किस तरह व्यवहार करना चाहिये यह सीख दी है । भक्ति माता हमेशा भक्ति के केन्द्र स्थान पर रही है तथा भक्तों को उनकी भक्ति तथा श्रद्धा प्रगट करने का सदा मार्गर्शन करती रही है ।

●

एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर प.पू. गादीवालाजीके आशीर्वाद से (जीवन का अर्थ)

संकलन - वर्षा नटवरलाल कोटक

अपनी लक्ष्मीस्वस्मा प.पू. गादीवालाजी शिल्पी या

महात्मा का दृष्टांत देकर जीवन के अर्थ को समझाई हैं। संस्कार, संकल्प, तथा सर्जन ये तीनो अपने जीवन के महत्व के पाये हैं। किसी शिल्प कार की दुकान के बाहर एक पत्थर पड़ा है जो अव्यवस्थित है तथा दुकान के भीतर जो पत्थर है वह व्यवस्थित रखा हुआ है। मूर्तिकार शिल्प कार से पूछता हैकि बाहर क्यों पत्थर रखे है, उसन उत्तर दिया कि ये पत्थर काम के नहीं है। यह सुनते ही मूर्तिकार उन पत्थरों को खरीदने के लिये तैयार हो जाता है। उन्हें अपने साथ लाकर कुछ ही दनन में सुन्दर मूर्ति बनाकर तैयार कर देता है। मूर्तिकार उन खराब पत्थरों में से बनी मूर्ति को मूर्त स्म दे देता है। ठीक यही स्थिति अपने जीवन में भी है। पशु, पक्षी,कीट, पतहादि का जन्म अधर्म का फल है। मनुष्य जन्म उत्तम कर्म का पल है। अब हमें यह समझने की जरुरत है कि हमारा जीवन कहीं व्यर्थ पर्थर की तरह तो नहीं हैं यदि ऐसा है भी तो उसे मूरतति स्म देने की आवश्यकता है। उसके लिये आवश्यक यह है कि सत्संग करें, श्रीजी महाराज द्वारा बताये मार्ग पर चलें, शास्त्रों का चिन्तन करें, एक निष्ठा भक्ति करें, समर्पित भाव रखें। मनुष्य जीवन व्यर्थ न चला जाय इसका सदा ध्यान रखना चाहिये। सत्संगि जीवन में सत्संगी को जीवन जीने की प्रक्रिया बताई गई है। इसी तरह विदुर नीति मं भी व्यावहारिक व्यवस्था बनाई गई है। इन सभी शास्त्रों का चिंतन करके, उच्च शिक्षण प्राप्त कर अपने जीवन की धारा को बदलना चाहिये। दूसरा "संकल्प" अर्थात् अच्छे विचार आना। कोई भी कार्य करे तो उससे पहले मन में विचार कर लेना चाहिये। गलत सही क्या है बाद में पंच वर्तमान को ग्रहण करे। पूज्या गादीवालाजी एक महात्मा का दृष्टांत देकर समझाती है कि एक गृहस्थ महात्मा के पास जाता है। वह महात्मा से पूछता है कि आप में इतने सारे गुण कैसे आये ? वह हमात्मा कहता है कि अरे भाई अब तेरे सात दिनही अवशेष रहे इसलिये सत्कर्म करो।

बाद में आओंगे तो तुम्हारे प्रश्न का उत्तर हम देंगे। अब वह वापस घरजाता है और महात्मा के निर्देशानुसार सत्कर्म करता है। बहुत सारे पुष्य करने के बाद महात्त्माा के पास जाता है। महात्मा गृहस्थ से पूछता है कि भाई ? क्या-क्या करके आये हो तब वह कहता है जप-तप-पुण्य, दान इत्यादि सत्कर्म करके आया हूँ। अब यह बताओं के छ दिन में खराब विचार कितने आये। खराब काम कितने किये। यह सुनकर उसे कहा जिसके मस्तक पर काल भ्रमण करता हो, वह मृत्यु के भय से खराब विचार कैसे करसकता है। यह सुनकर महात्माजी गृहस्थ को समझाते है कि मैं तो सतत मृत्यु की याद करके जीता हूँ औरतूं मृत्त्यु से डरता है, यदी दोनो में अन्तर है, यही हमारे में सद् गुण हैं। इसी तर हमें भी सतत मृत्यु का स्मरण रखना है। और यह बी स्मरण रखना चाहिये कि हमारे एक-एक दिन घटता जा रहा है। जिसके जीवन में ऐसा विचार आयेगा वह मानव में से देवत्व को प्राप्त करलेगा।

इस तरह दृष्टांद द्वारा प.पू. गादीवालजी प्रत्येक मानव को व्यर्थ पत्थर से अळग होकर एक सुंदर मूर्ति कास्म देने की प्रेरणा दी है। बडे रहस्यात्मक भाव में यह वाणी निर्गत हुई है सभी को इसका निरन्तर ध्यान रखना चाहिये। शिल्पी के स्म में पूज्या गादीवालाजी महिलाओं को मूर्ति स्म देने में लगी है। इसी तरह प.पू. आचार्य महाराजश्री पुस्म धर्म को मूर्ण स्म देने में सदा रात दिन देश-विदेश में भ्रमण करते रहते है। एकबार सत्संगी बहनों तथा सां.यो. बहनों के साथ रात्रि पापन करने का अवसर मिला। बहनों ने कहा कि आप हम सभी के साथ रात बिताई तब पू. गादीवालाजीने कहा यह तो एक रात है, यदि सत्संग की अभिवृद्दि होती हो तो कितनी ही रात्रि साथ बिता सकती हूं। इस तरह की बात सुनकर यह अनुभव हुआ कि मा-बाप तो मात्र जन्म देने के साथी होते हैं। सच्चा जन्म तो गुरुसे ही मिलता है। गुरु स्वयं शक्ति संपन्न होते हैं। वे स्वयं भवसागर पार करते हैं और दूसरो को भवसागर पार कराते भी हैं। ऐसे धर्मवंशीगुरुको स्वयं श्रीहरि ने सत्संग के लिये दिया है, अब मात्र स्वयं प्रयत्न करने की जरुरत है। श्रीजी महाराज सभी को इस तरह प्रयत्न करने की शक्ति प्रदान करें ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

प्रश्न पेटी

साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ श्रीमद् सत्संगिभूषण में कितना अंश, कितना अध्याय तथा कितने श्लोक है ?

प्रश्न : २ प्रेमी भक्त "पूंजाभाई कोडिया" को महाराजने अपने हाथ से पानी पिलाये थे - वह भक्त किस गाँव का था ?

प्रश्न : ३ रामानंद स्वामी का जन्म किस साल में हुआ था ?

प्रश्न : ४ गाँव सातपड़ा का भगोभक्त मन में किस प्रकार के संकल्प होने पर गढपुर आये थे ?

प्रश्न : ५ "कोण कुलने कोण कुटुंबी, कोण मात ने तातू। कोण भाईनी कोण भगीनि, ब्रह्म हमारी जात। यह उपदेशात्मक वात एक संत अपने सगे सम्बन्धीओं को कह रहे हैं ऐसे किस प्रसंग पर यह वात कहनी पड़ी थी तथा इस उक्ति को कहने वाले कौन संत थे।

प्रश्न : ६ भगवान के पाँच स्म, शास्त्र में कौन-कौन है ? वर्णन कीजिये ?

प्रश्न : ७ "प्यारा मुजने लगी तारी मोहनी, रसियावर रे तारुंस्म जोईने मुजने" इस उपरोक्त कीर्तन पंक्ति के रचयिता का नाम बताइये ?

मार्च २००९ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों के नाम।

(१) जिस शास्त्र में श्रीकृष्ण भगवान का तथा वाराहादिक भगवान के अवतारों का सयुक्तिक खंडन किया हो तो भी उस शास्त्र को न सुनना चाहिये न मानना चाहिये शि.प. २९। (२) आजनी घड़ी रे धन्य आज नी घड़ी। (३) जोबन पगी। (४) कृष्ण शर्मा के यहाँ भवानी से तीन पुत्र तथा बाल एवं चन्दन नाम की दो पुत्रियां पैदा हुई थी। (५) तीसरे वर्ष में, जेठ मास, कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, धनिष्ठा नक्षत्र में गुरुवार को वेदज्ञ ब्राह्मण द्वारा यथा शास्त्र चौलकर्म करवाया था। (६) श्लोक २१४, १००० नाम ग्रन्थकर्ता शतानंद स्वामी। (७) स.गु. निष्कुलानंद स्वामी।

१. माधवजी भाई हरखजीभाई आद्रोजा - मोरबी
२. भक्तिभाई भोलाभाई - झुलासण
३. पटेल दादा कीरीटभाई - नरोडा
४. अंजनाबहन मनुभाई - नांदोल
५. गंगाबहन भक्तिभाई पटेल - झुलासण
६. मृदुलाबहन बिपीनभाई सोनी - नवावाडज
७. पटेल ज्योत्सनाबहन राजेन्द्रभाई - आणंदपुरा
८. पटेल गोरधनभाई शंकरदास - सोजा
९. घनश्यामभाई पगवानभाई परमार - सुरत
१०. वर्षाबहन अरविन्दभाई सोनी - मेमनगर
११. पटेल विष्णुभाई जीवाभाई - सीतापुर
१२. माणेकबहन मणीलाल पटेल - दहेगाम
१३. दक्षाबहन घनश्यामभाई सोनी - अहमदाबाद
१४. श्री स्वामिनारायण मंदिर बहनोनका - मोखासण
१५. रेखाबहन कीर्तिकुमार - ऊँझा
१६. मनाली पुष्पा - जीरागढ
१७. पटेल पुरीबहन भगवानभाई - खारवा
१८. अशोकभाई भोलादास पटेल - वडु
१९. अमृतलाल के. मोदी - सोजा
२०. विनोदभाई पी. पटेल - वहेलाल
२१. डाभी मफाजी सरदारजी - डांगरवा
२२. काछिया राधिका बाबूभाई
२३. गोरधनभाई वी. सीतापरा - बापुनगर
२४. सां.यो. शिल्पाबा, शितलबा - सुरेन्द्रनगर
२५. सां.यो. भारतीबा, मंजूबा - अहमदाबाद हवेली
२६. भावनाबहन कमलेशभाई खंधडिया - मोरबी

नोंध : प्रश्नपेटी विभाग के भक्तों को जयश्री स्वामिनारायण के साथ बताना यह है कि नवावाडज के भक्तों में पटेल त्रिभोवनभाई लक्ष्मणदास पुजारी के एक उत्तर को समान अक्षर में अलग कागंज पर किसी के द्वारा २००९ मार्च में प्राप्त किया गया था। अब जो भी उत्तर आयेंगे उन्हें गोपनीय ढंग से चिंतन करके ही प्रकाशित किये जायेगें। यह सभी जानलें। प्रश्नों का उत्तर कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर मासिक कार्यालय के प्रश्नपेटी विभाग के पते पर भेंजना आवश्यक है। जिसके प्रश्न एवं उत्तर सही होंगे उन्ही के लेख प्रकाशित किये जायेंगे।

सत्संग समाचार

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का १८७ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से संपन्न

अपने इष्टदेव सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवानने संप्रदाय में श्रीनगर अहमदाबाद में सर्व प्रथम भव्य गगनचुंबी महामंदिर निर्माण कराकर स्वस्वस्य श्री नरनारायणदेव को अपनी बाहों में भरकर सभी आश्रितों के कल्याण हेतु प्रतिष्ठित किया था। ऐसे महा प्रतापी श्री नरनारायणदेव का १८७ वाँ पाटोत्सव फाल्गुन शुक्ल तृतीया के शुभ दिन श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, वडताल श्री लक्ष्मीनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से वेदविधि पुरस्सर धूमधाम के साथ मनाया गया था। देश-विदेश से हजारों हरिभक्त देव दुर्लभ दर्शन का अलौकिक आनंद लिये थे।

प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी के मार्गदर्शन में सभा संचालन युवान कथाकार स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजीने किया था। पाटोत्सव के यजमान प.भ. जीतुभाई मगनलाल चौकसी तथा नवीनभाई मगनलाल चौकसी परिवार तथा ध्वजदंड के यजमान प.भ. सुरेन्द्रभाई पटेल (विशाला होटल) आदि हरिभक्तोंने दोनों पीठाधीश्वरों का पूजन अर्चन करके आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किया था।

अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी संप्रदाय के मूर्धन्य लेखक कथाकार शा.स्वा. हरिकेशवदासजी, जेतलपुर के स.गु. शा.स्वा. पी.पी. स्वामी, स.गु. शा.स्वा. निर्गुणदासजी, मूली के स्वामी कृष्णवल्लभदासजी, शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी इत्यादि संतोने प्रासंगिक प्रवचन में आगामी धर्मकुल वन्दना महोत्सव के सन्दर्भ में सभी हरिभक्तों को तन, मन, धन से सेवा करने के लिये कहा।

संप्रदाय के मूर्धन्य लेखक स.गु.शा.स्वा. हरिकेशवादसजी द्वारा लिखी गई लांधण लीला पुस्तक का विमोचन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलों द्वारा हुआ।

इस दिव्य प्रसंग में पू. महंत स्वामी के मार्गदर्शन में पू.ब्र. राजेश्वरानंदजी, स.गु.स्वा. देवप्रसाददासजी (नारायणघाट महंतश्री) स.गु. महंत नाना पी.पी. स्वामी (नारायणघाट) को. पार्षद दिगम्बर भगत, भंडारी स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी, स.गु.स्वा. हरिचरणदासजी (कलोल) योगी स्वामी, भक्ति स्वामी इत्यादि संत-पार्षद मंडल विविध सेवा में अग्रेसर थे। सभा के विराम बाद दोनों आचार्य महाराजश्रीने श्री नरनारायणदेव की आरती उतारी थी। सभी भक्तजन अन्नकूट का दर्शन करके तथा महाप्रसाद लेकर धन्य हो गये थे। - *को. जे.के. स्वामी*

श्री नरनारायणदेव जयंती - पुष्प दोलोत्सव भव्यता से संपन्न

फाल्गुन शुक्ल पूनम के दिन श्री नरनारायणदेव जयंती पुष्प दोलोत्सव अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर के भव्य प्रांगण में दोपहर को १२ से १ तक धूमधाम से मनाया गया था। संप्रदाय के भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री सर्व प्रथम श्री नरनारायणदेव की आरती उतारे बाद में सभी के ऊपर अबीर गुलाल से होली खेले। वहाँ से मंदिर के भव्य चौक में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी के मार्गदर्शननुसार को.पार्षद दिगम्बर भगत तथा संत मंडल ने ट्रेक्टर की टोली में किंशुक के पुष्प का सुगन्धित जल भरकर तैयार किया था, जिसे इलैक्ट्रिक पिचकारी द्वारा पू. लालजी महाराजश्री आत्मीय हजारों हरिभक्तों को किंशुक के पुष्परस से बने रंग से सभी को भिंगो दिया। संत हरिभक्त आज प.पू. लालजी महाराजश्रीके हाथों से रंगोत्सव का आनंद लेने के लिये घंटो तक प्रतीक्षा करते रहे। आज का दिन दिव्यानन्द दायक था। इस प्रसंग पर प.पू. ब्र.स्वामी राजेश्वरानंदजी, नारायणघाट के महंत पी.पी. स्वामी हरिचरणदासजी (कलोल) भंडारी स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी, योगी स्वामी, भक्ति स्वामी, तथा अन्य हरिभक्तभी सेवा में लगे रहे। - *को. जे. के. स्वामी*

श्री स्वामिनारायण संस्कृत पाठशाला का अहमदाबाद टाउन होल में वार्षिकोत्सव संपन्न

श्रीजी महाराज के समकालीन समय में भी स.गु. मुक्तानंद स्वामी, प्रेमानंद स्वामी इत्यादि संत अपनी कला द्वारा श्रीहरि को यदा-कदा प्रसन्न करते थे। जिस में प्रेमानंद स्वामी स्वयं की रचना में लिखे है कि - "प्रेमानंद गाये आये, आवे ओरारक्त क्या रे हवे देवुं रे हरि हंसता।" स.गु. मुक्तानंद स्वामी सुंदर नृत्य करके हाथी जैसा पैर बनाकर कुंमकुम लगाकर नृत्य करते थे। इस तरह महाराज के समय में संत श्रीहरि को प्रसन्न करते थे। उसी परंपरा के अनुसार आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री संस्थापित तथा प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज के आशीर्वाद से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की शुभेच्छा से एवं जेतलपुर मंदिर के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पूज्य शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से चलती श्री स्वामिनारायण संस्कृत पाठशाला के विद्यार्थी संत-पार्षद एवं ब्राह्मण विद्यार्थी द्वारा आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री की २०० वीं जन्मजयन्ती के उपलक्ष्य में कालुपुर मंदिर द्वारा आयोजित "धर्मकुल वंदना" अन्तर्गत भव्य ऐतिहासिक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। संप्रदाय के इतिहास में इस प्रकार का कार्यक्रम प्रथमवार होने से विद्यार्थियों का उत्साह विशेष था। उसमें भी अहमदाबाद के श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा वडताल के श्री लक्ष्मीनारायदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य श्री राकेशप्रसादजी महाराजश्री के साथ पूज्य बड़े महाराजश्री, अ.सौ. पूज्य गादीवालाजी (अहमदाबाद) करीब दोसो (२००) से भी अधिक संत पधारे थे। सांख्योगी बहने एवं बड़ी संख्या में हरिभक्त पधारे थे। धर्मकुल के स्वागत गीत से तीनों आचार्य महाराजश्री प्रसन्न हुये थे। वैदिक मंगलाचरण के गान से दीप प्रागट्य के समय तीनों महाराजश्री तथा पू. बड़े संत एवं सोमनाथ सं.यु.के पूर्व कुलपति पंकजभाई जानी, कांकरेज के धारा सभ्य श्री बाबूभाई देसाई उपस्थित थे। दीप प्रागट्य के बाद नियत कार्यक्रम एक के बाद एक प्रस्तुत होने लगा, जिसे देख कर प्रेक्षक आनंदित होकर तालियों की गड़गडाहट से सारा वातावरण गुंजायमान हो गया था।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये अनेक लोग प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से प्रेरक मार्गदर्शन दिये थे। पू. महाराजश्री इस कार्यक्रम को देखकर अति प्रसन्न मुद्रा में बोल उठे कि यह अद्‌भुत कार्यक्रम है। ऐसा कार्यक्रम खुले में होना चाहिये। इस समग्र कार्यक्रम की पूर्ण तैयारी शा.स्वा. सत्यस्वरूपदासजीने किया था। संस्था के अन्य कार्यकर्ता भी इस कार्यक्रम में सहायक बने थे। समग्र कार्यक्रम का सुंदर संचालन शा.स्वा. हरिओंप्रकाशदासजीने किया था। इस प्रसंग पर उपस्थित दोनो देश के दोनों आचार्य महाराजश्री तथा पू. बड़े महाराजश्री एवं पू. गादीवालाजी तथा दूर दूर से आये हुये संत हरिभक्त तथा अन्य लोग भी विद्यार्थियों के इस कार्यक्रम को देखकर उत्साहित किये थे। इसके लिये शा.स्वा. हरिओंप्रकाशदासजीने सभी का आभार माना था। इस कार्यक्रम की सफलता में पूर्ण सहकार जेतलपुर मंदिर के महंत के.पी. स्वामी का था।

-वी.पी. स्वामी, जेतलपुर

ओला गाँव में श्रीमद् भागवत पारायण

सर्वोपरि श्रीहरि के चरण कमल से अंकित तथा जिस गाँव में रतनबाई ने श्रीजी महाराज को दुल्हे की तरह परछन की थी। ऐसे इस प्रसादी के गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से एवं अ.नि. प.भ. चिमनलाल नाथालाल पटेल के स्मरणार्थ श्रीमती नाथीबहन चिमनलाल के शुभ संकल्प से ता. १८-२-०९ से ता. २४-२-०९ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण संप्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (पी.पी. स्वामी) के वक्तापद पर संगीतमय शैलीमें कथाका रसपान सभीने किया। संहितापाठ में महंत शा.स्वा. उत्तमप्रियदासजी (महेसाणा) विराजमान थे।

कथा के प्रसंग में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव रुक्मिणी विवाह धूमधाम से मनाया गया था।

यजमान परिवार के आमंत्रण पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी। जिनके दर्शन-आशीर्वाद का

सभी बहनों को सुख मिला था ।

ता. २४-२-०९ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । उस समय संत भक्तों ने भव्य स्वागतोत्सव किया था । बाद में प.पू. आचार्य महाराजश्री सभा में पधारे थे । वहाँ पर पुष्प वृष्टि के साथ जयघोष द्वारा अभिवादन किया गया था । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने प्रथम व्यासपीठ का पूजन अर्चन करके व्यास पीठ की आरती उतारकर अपने सिंहासन पर विराजमान हुये थे । यजमान परिवारने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन एवं आरती उतारकर भेंट सौगाद अर्पण किया था । सभा में स.गु.शा. महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी (जेतलपुर) महंत शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी (माणसा) शा.स्वा. पी.पी. (छोटे पी.पी.) मंहत स्वामी नारायणप्रसाददासजी जेतलपुर के महंत के.पी. स्वामी, पूर्णानंद ब्रह्मचारी, हरिओंम स्वामी, भक्ति स्वामी इत्यादि संतोने प्रासंगिक प्रवचन किया था । पारायण का समग्र आयोजन यजमान परिवार जगदीशभाई चिमनभाई पटेल परिवार तथा वी.पी. स्वामी (जेतलपुर) ने किया था । अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने गाँव के लोंगो को नियम निश्चय पक्ष में रहने की बात करके श्री नरनारायणदेव के माहात्म्य को समझाकर आशीर्वाद दिया था ।

- साधु ब्रजवल्लभदास, जेतलपुर

घाटलोड़िया श्री स्वामिनारायण मंदिर में दूसरा पाटोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में द्वितीय पाटोत्सव प्रसंग पर तीन दिन तक भव्य रात्रि कथा का आयोजन किया गया था । जिस में विद्वान कथाकार शा.स्वा. निर्गुणदासजी थे । साथ में घनश्यामप्रकाशदासजी (माणसा) एवं विश्वस्वरूपदासजीने भगवान की लीला चरित्र एवं धर्मकुल माहात्म्य का सुन्दर निरूपण किया था । इस प्रसंग पर समूह महापूजा का आयोजन किया गया था जिसमें करीब १०० जितने हरिभक्त लाभ लिये थे । शा.स्वा. प्रेमस्वरूपदासजीने महा पूजा विधि कराई थी । पाटोत्सव के शुभ दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से ठाकुरजी के पाटोत्सव की आरती उतारी गई थी ।

इस प्रसंग पर आयोजित प्रासंगिक सभा में विद्वान संतो की प्रेरक वाणी के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद दिया था ।

श्री नरनारायणदेव धार्मिक परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों को प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से इनाम वितरण किया गया था ।

पाटोत्सव के यजमान श्री सोमाभाई नरसिंहभाई पटेल (गुलाबपुरा) परिवार ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीका पूजन अर्चन करके आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किया था ।

अंत में सभी भक्तों को देवदर्शन, आचार्य दर्शन एवं प्रसाद प्राप्त हुआ था । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रेरणा रूप थी । *- प्रवीणभाई टी. पटेल*

श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (दरबारो का मंदिर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर के ८३ वाँ पाटोत्सव फाल्गुन शुक्ल-३ ता. २८-३-०९ को धूमधाम से संपन्न हुआ । इस प्रसंग पर मंदिर को सुंदर ढंग से सजाया गया था । प्रातः ७-३० तक भजन-कीर्तन का आयोजन किया गया था ।

श्री नरनारायणदेव धार्मिक परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र देकर प्रोत्साहित किया गया था । *- डाभी शिवाजी रजुजी कोठारी*

एप्रोच (बापूनगर) मंदिरका चौथा पाटोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत लक्ष्मणजीवनदासजी की प्रेरणा से फाल्गुन शुक्ल-८ के शुभ दिन एप्रोच मंदिर का चौथा पाटोत्सव मनाया गया था । जिसमें षोडशोपचार विधि से ठाकुरजी का महाभिषेक एवं अन्नकूट दर्शन एवं आरती तथा सभा इत्यादि का कार्यक्रम किया गया था ।

प्रातः ६-४५ को प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से घनश्याम महाराज का अभिषेक एवं अन्नकूट की आरती उतारी गई थी ।

प्रासंगिक सभा में पाटोत्सव के यजमान श्री अशोकभाई ईश्वरभाई पटेल द्वारा प.पू. महाराजश्री के पूजन अर्चन के बाद अहमदाबाद मंदिर के पूर्व महंत शा.स्वा. निर्गुणदासजी, आनंदजीवन स्वामी,

विश्वप्रकाशदासजी, गुस्प्रसाददासजी, यज्ञप्रकाशदासजी इत्यादि संतोने प्रसंगोचित प्रवचन किया था । इस प्रसंग पर ब्रह्मचारी पुजारी राजेश्वरानंदजी, मथुरा, बद्रिनारायण, वहेलाल इत्यादि मंदिरो के महंत पधारे हुये थे ।

प.पू. महाराजश्रीने श्रीहरि की सर्वोपरि महिमा बताकर सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । अन्य लोगों को कंठी धारण कर गुरुमंत्र भी दिये थे । सभी लोग चरण स्पर्श का सुख प्राप्त किये थे । - *गोरधनभाई वी. सीतापरा*

चलो धर्मकुल वंदना महोत्सव में नियम-संकल्प ले

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्विशताब्दी जन्म जयंती के उपलक्ष्य में "धर्मकुल वंदना महोत्सव" (ता. १-६-०९ से ता. ३-६-०९) मनाया जायेगा ।

इस अलौकिक दिव्य प्रसंग पर अपने इष्टदेव सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान तथा उन्हीं के अपर स्वरूप धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री को प्रसन्न करने का यह सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ है तो नीचे निर्दिष्ट नियम लेकर उसकी सम्पूर्ण जानकारी श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद (साहित्य केन्द्र से) प्राप्त करलें ।

● माला फेरना ● प्रदक्षिणा फेरना ● पंचाग प्रणाम करना ● दंडवत करना ● जनमंगल पाठ करना ● मंत्रलेखन करना ● वचनामृत पाठ करना ● भक्त चिंतामणि पाठ करना ● बाल चरित्र पाठ करना ● कीर्तन करना ● वंदु के पद बोलना ● सत्संग सभा करना ● समूह कीर्तन भक्ति करना ● ठाकुरजीका पदार्पण कराना ● महाराजश्री का पदार्पण कराना ● संतो का पदार्पण कराना ।

नाम _____

घर क पता _____

फोन नं. (घर) _____ (ओ.) _____

मो. _____

धारण किये गये नियम (१) _____

(२) _____ (३) _____

(४) _____ (५) _____

माधवगढ (ता. प्रांतीज)

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १९-२-०९ के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री के हाथों से ठाकुरजी का पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था ।

सर्व प्रथम प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री घनश्याम महाराजश्री का षोडशोपचार पूजन-अभिषेक-आरती किये बाद में श्रीफल द्वारा पूर्णाहुति करके ठाकुरजी की आरती उतारे थे ।

प्रासंगिक सभा में नारायणघाट मंदिर के महंत छोटे पी.पी. स्वामी इत्यादि संतोने प्रेरक प्रवचन किये थे । अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्री ने सभी सभाजनों को आशीर्वाद दिया था । प्रसंग का आयोजन माधव स्वामीने किया था ।

अहमदाबाद से प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ ब्रह्मचारी राजेश्वरानंदजी तथा अन्य संत भी पधारे थे । श्री भलाभाई के यहां प.पू. आचार्य महाराजश्री के ठहरने की व्यवस्था की गई थी । - *कोठारीश्री*

आकरुंद गाँव मं सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. २८-१२-०८ के दिन सत्संग सभा का सुंदर आयोजन सत्य संकल्प स्वामीकी प्रेरणा से आयोजन किया गया था ।

इस प्रसंग पर गांधीनगर सेक्टर-२३ स्वामिनारायण मंदिर के मूर्धन्य लेखक पू. शा. हरिकेशवदासजी, शा.स्वा. चन्द्रप्रकाशदासजी (बीलिया) स.गु. घनश्याम स्वामी, उत्तम स्वामी, हरिप्रियदासजी इत्यादि संतोने सर्वोपरि श्रीहरि की महिमा समझाकर धर्मकुल का माहात्म्य समझाया था । इस प्रसंग पर बायड, डेमाई, धनसुरा, रडोदरा, सायरी गाँव के श्रद्धालु हरिभक्त पधारे थे । - *श्री नरनारायणदेव युवक मंडल आकरुंद*

दहेगांव श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. २६-१-०९ के दिन अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी एवं नारायणघाट के महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी इत्यादि संत मंडल पधारकर सुंदर कथा प्रवचन का लाभ दिये थे । इसके बाद ठाकुरजीके समक्ष खीचड़ी उत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया था । इस प्रसंग पर हरिक्तों ने उत्सव का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किया था । - *हरिभक्त समस्त दहेगांव*

विदेश सत्संग वृत्तान्त

क्लिवलेन्ड (अमेरिका I.S.S.O.) श्री स्वामिनारायण मंदिर

सर्वोपरि श्रीहरि की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में ता. २८-२-०९ के दिन भव्य शाकोत्सव संपन्न हुआ था । शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजीने शाकोत्सव का माहात्म्य समझाया था।

महंत स्वामी हरिनंदनदासजीने ठाकुरजी का सुन्दर श्रृंगार करके शाकोत्सव का दर्शन करवाया था । ता. १५-२-०९ के दिन महाशिवरात्री का सामूहिक शिवपूजन किया गया था ।

जिसकी महिमा संतोने समझाई थी । बहनें प्रभु के समक्ष नाना विध प्रसाद बनाकर अर्पण की थी, जिसे हरिभक्तों को प्रसाद के रूप में दिया गया था । हरिभक्तों की सेवा भी सराहनीय है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से यहाँ की सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है । - *प्रकाशभाई पटेल कलिवलेन्ड*

ह्युस्टन (अमेरिका) श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री की कृपा से श्री नरनारायणदेव का ९ वां पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था ।

इस प्रसंग पर ता. १३-३-०९ से ता. १५-३-०९ तक स.गु. निष्कुलानंद स्वामी कृत पुरुषोत्तम प्रकाश की कथा शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी (मूलीवाला) के वक्तापद पर हुई थी ।

बरसते पानी में भी हरिभक्त कथाश्रवण करने आते रहे । १४ मार्च को महापूजा का सुन्दर आयोजन किया गया था । जिसमें बहुत सारे हरिभक्त लाभ लिये थे ।

इस पाटोत्सव में प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे ऐसी महेच्छा थी । परंतु पू. महाराजश्री का इन दिनों कोई कार्यक्रम नही था । संयोगवश श्रीजी महाराज की इच्छा से धर्मकुल वन्दना महोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू. आचार्य महाराजश्री को संत मंडल के साथ अमेरिका पधारने का निश्चित हो गया । इस एकाएक आगमन से वहाँ के हरिभक्त समाज में आनंद की सीमा ही न रही ।

हरिभक्त धूमधाम के साथ अपने प्राणप्यारे प.पू. महाराजश्री का बड़े धूमधाम के साथ स्वागत किया । स्वयं अपने हाथों से श्री नरनारायणदेव का ९ वाँ पाटोत्सव महाभिषेक धूमधाम से मनाया गया था । के.पी. स्वामी की प्रेरणा से छोटे-बड़े सभी हरिभक्त तन, मन, धन से पाटोत्सव की सेवा में लगे रहे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से धर्मकुल वंदना महोत्सव में उत्तम अनुदान करके हरिभक्त प.पू. महाराजश्री की प्रसन्नता प्राप्त किये हैं । - *रमेश टी. पटेल*

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

महेसाणा : प.भ. मोदी जयंतीलाल डाह्यालाल श्रोफ श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं ।

अहमदाबाद-बापूनगर : प.भ. जयंतीबहन शामजीभाई डोबरिया ता. २-३-२००९ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं ।

बालवा : प.भ. बलदेवभाई मोतीजी चौधरी (खरवाड) ता. १४-२-०९ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

असलाली : प.भ. बचुभाई टेक्षीवाला के साले प.भ. जसभाई साराभाई पटेल (पुजारी) ता. २२-२-०९ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

मांडल : श्री स्वामिनारायण मंदिर की पुजारी सां.यो. कुंवरबा (९३ वर्ष) ता. १५-२-२००९ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है ।

विरमगाम : प.भ. मोहनलाल धारशीभाई ठक्कर की धर्मपत्नि अ.सौ. ललीताबहन मोहनलाल ठक्कर ता. १०-३-२००९ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।



ओला गाँव में पारायण के अवसर पर प.पू. आचार्य महाराजश्रीका पूजन करते हुये यजमानश्री





ओला गाँव में पारायणके अवसर पर हरिभक्तों की विशाल सभा में वक्ता पूज्य पी.पी. स्वामी तथा यजमानश्री



जेतलपुर श्री खती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के पाटोत्सव के अवसर पर अभि तथा अन्नकूट दर्शन





विहार गाँव में बहनों के मंदिर में पाटोत्सव के अवसर पर अन्नकूट की आरती उतारते हुये प.पू. लालजी महाराजश्री



धर्मकुल वंदना महोत्सव के उपलक्ष्य में मोटेरा साबरमती जनतानगर नारायणघाट युवक मंडल द्वारा आयोजित

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011





रीहिल (साउथजर्सी) अपने मंदिर में धर्मकुल वंदना महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित सभा में आशीर्बाद देते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा महंत स्वामी शा. हरिकृष्णदासजी, देव स्वामी (नारायणघाट), नारायणवल्लभदासजी (वडनगर) तथा राम स्वामी (कोटेश्वर)



ोहील श्री स्वामिनारायण मंदिर के देवों की आरती उतारते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री



राणीप बहनों के मंदिर के १० वें पाटोत्सव प्रसंग पर आरती उतारते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री

પ.પૂ.ધ.ધુ.આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી



શ્રી નરનારાયણ દેવ

પ.પૂ. આદિ આચાર્ય
શ્રી અયોધ્યાપ્રસાદજી મહારાજશ્રી
જન્મ દ્વિશતાબ્દી
મહોત્સવ

ધર્મકુળ વંદના મહોત્સવ





પ.પૂ.ધ.ધુ.આચાર્ય ૧૦૦૮
શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

તા. ૧ થી ૩ જૂન ૨૦૦૯ જેઠ સુદ ૯ થી ૧૧ સુધી

સ્થળઃ- ગણેશ હાઉસીંગ કોર્પો.લી., સરખેજ-ગાંધીનગર રોડ,
થલતેજ ચોકડીથી સોલા બ્રીજ વચ્ચે, થલતેજ, અમદાવાદ



-:આયોજકઃ-
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧

ful Kharsani